भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2023-2025

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 8 | अंक 25 | उदयपुर सोमवार 01 जनवरी 2024 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

सबसे बड़ी सफलता है समय का नियोजन

- आचार्य महाप्रज्ञ -

मनुष्य अनेक काम करता है। वह काम करने में स्वतंत्र है किन्तु पूरा स्वतंत्र इस दुनिया में कोई हो नहीं सकता। वह परतंत्र भी है। अच्छा निमित्त मिल जाए तो अच्छा काम होता है। निमित्त उचित नहीं मिले तो कार्य में बाधा आती है। भगवती सूत्र में पांच निमित्तों का उल्लेख है- द्रव्य करण, क्षेत्र करण, काल करण, भाव करण और भव करण। द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव और भव ये पांच साधन हैं। इनमें एक है काल। समय बहुत बड़ा निमित्त है। समय के साथ क्रिया का सम्बन्ध है। काम करना और समय दोनों को अलग नहीं किया जा सकता।

हम समय का उपयोग कैसे करें? सूर्य उगता है, अस्त होता है। रात आती है और चली जाती है। चौबीस घण्टे का यह समय है। आदमी काम करता है। कार्य का पहला बिन्दु उसके सामने है- दिनचर्या का निर्धारण। जो व्यक्ति दिनचर्या का सम्यक् नियोजन नहीं करता, उसका बहुत सारा समय व्यर्थ चला जाता है। सफलता के लिये आवश्यक है कि एक-एक क्षण का उपयोग किया जाए। दुनिया में वे व्यक्ति महान बने हैं जिन्होंने एक-एक क्षण का उपयोग किया है। उसके लिये आवश्यक है जागने से लेकर सोने तक की दिनचर्या का निर्धारण। जागने का समय और सोने का समय- दो भागों में हमारा समय विभक्त होता है। कितना घण्टा जागना है और कितना घण्टा सोना है- इन दोनों का सम्यक् निर्धारण आवश्यक होता है।

प्रश्न है- जागने का समय कौनसा होना चाहिये? सोने का समय कौनसा होना चाहिये? दोनों के अपने-अपने समय हैं। कहा जाता है- जब जागे तभी सवेरा। यह बात तो ठीक है परन्तु एक समय होता है जागने का। बहुत अनुभव के बाद अंत:ज्ञान से समय का निर्धारण किया गया। चार बजे से लेकर सूर्योदय तक का समय ब्रह्ममुहूर्त है। यह जागरण का महत्त्वपूर्ण समय है।

वर्तमान की चिन्तन धारा में वैज्ञानिक शब्दावली में समझें तो चार बजे से सूर्योदय तक का समय सेरोटॉनिन के स्त्राव का समय है। उस समय स्त्राव होता है पीनियल ग्रंथि से सेरोटॉनिन का, वह अनेक दृष्टियों से मनुष्य के लिये बड़ा उपयोगी है। आज की दिनचर्या ऐसी बन गई कि बहुत कम सम्भव है आदमी चार बजे उठे। सोने का समय एक बजे, कभी दो बजे। खाने का समय रात को बारह बजे, एक बजे। चार बजे उठने की बात तो मात्र इतिहास की बात रह गई। व्यवहार में कैसे आ सकती है? बड़ा कठिन है क्योंकि सारी जीवनशैली बदल गई है।

लड़का आठ बजे उठता था। एक दिन मां बोली, बेटा! अब तो उठ जा। देखता नहीं है सूरज कितना चढ़ गया। लड़का बोला, मां! सूरज से मेरी तुलना करती हो? सूरज तो शाम को चला जाता है, सो जाता है। मैं तो रात को ग्यारह बजे सोता हूं। मेरी सूरज से क्या तुलना हो?

किसी युवक से कहा जाएगा तो कहेगा कि मैं तो रात को एक बजे सोता हूं, मेरी सूरज से क्या तुलना है? एक बजे सोयेगा तो चार बजे कैसे उठेगा? सम्भव नहीं है। जागने के समय का नियोजन करना बड़ा कठिन हो गया है। व्यक्ति सफल होना चाहता है, अच्छा जीवन जीना चाहता है, शान्ति का जीवन जीना चाहता है। उसके लिये आवश्यक है कि चार और पांच बजे के आसपास जागरण अवश्य हो जाए। सूर्योदय से एक घण्टा, दो घण्टा पूर्व जागरण हो जाए तो उचित समय है।

एक प्रहर रात्रि यानि दस बजे के लगभग सोने का समय है। जो व्यक्ति अपनी दिनचर्या में सोने के समय और जागने के समय का नियोजन कर लेता है उसके दिन और रात दोनों बड़े आनन्द से बीतते हैं। बहुत लोग कहते हैं कि सो तो लेते हैं पर सुखद नींद नहीं आती। सपने ही सपने आते हैं।

सपनों में रात बीती। समय का अतिक्रम है तो ऐसा होगा। नींद भी नहीं आएगी। नींद का अपना एक समय होता है। यह सारा समय जैविक घड़ी के द्वारा निर्धारित होता है। ठीक समय काम नहीं करते हैं तो गड़बड़ी हो जाती है, समस्या पैदा होती है। अगर सोने का समय ठीक होता तो शायद नींद की गोलियां नहीं लेनी पड़ती। आज अरबों रूपयों की नींद की गोलियां चलती हैं। इसलिए चलती हैं कि सोने का समय अति क्रान्त होता है।

नींद का अपना समय है। जागने का अपना समय है। इसीलिए आगमकार ने अनुभव के आधार पर कहा- 'काले कालं समायरे।' बड़ा महत्त्वपूर्ण सूत्र है- जो काम जिस समय करना है, उसी समय करो।

सूत्रकृतांग सूत्र में बड़ी सुन्दर व्याख्या है कि जिस समय खाना हो उस समय खायें, जिस समय पानी पीना हो, उस समय पीएं, जिस समय सोना हो, उस समय सोएं, जिस समय जागना हो उस समय जागें। चार निर्देश दिये गये हैं। भोजन का समय, पानी पीने का समय, सोने का समय और जागने का समय। स्वास्थ्य की दृष्टि से, कार्य की सफलता की दृष्टि से विचार करें तो ये चारों बहुत महत्त्वपूर्ण सूत्र हैं।

मध्यान्ह बारह बजे के आसपास का समय भोजन के लिए सबसे उपयुक्त समय होता है। उस समय जैविक घड़ी के अनुसार लीवर पाचक रस का स्त्राव करता है। वह समय चला गया तो फिर लीवर का स्त्राव भी निकम्मा चला गया, उसका उपयोग नहीं हुआ। इससे समस्या पैदा होती है।

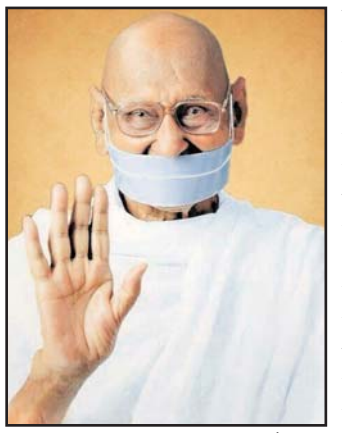

बीमारियों के बढ़ने के पीछे अनेक रहस्य हो सकते हैं। अनेक कारण हो सकते हैं। उनमें एक कारण है भोजन के समय का अतिक्रमण। प्रात:काल का नाश्ता स्वयं बीमारी का एक नाम बन गया है। भोजन का समय नहीं है वह। नाश्ते में भी आजकल एक शब्द और जुड़ गया-हैवी नाश्ता। हैवी जुड़ गया तो बीमारी का निमंत्रण बन गया। प्रात:काल यदि खाना हो तो थोड़ा दूध ले लिया। वह अन्न का समय नहीं होता। पेट भरकर खाने का समय नहीं होता। रात का समय भी भोजन का समय नहीं है। जैन परम्परा में रात्रि भोजन को निषध किया गया है। वह धार्मिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है और शरीरशास्त्र की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है।

सफलता के लिये आवश्यक है कि एक-एक क्षण का उपयोग किया जाए। दुनिया में वे व्यक्ति महान बने हैं जिन्होंने एक-एक क्षण का उपयोग किया है। उसके लिये आवश्यक है जागने से लेकर सोने तक की दिनचर्या का निर्धारण। चार बजे से लेकर सूर्योदय तक का समय ब्रह्ममुहूर्त है। यह जागरण का महत्त्वपूर्ण समय है। जो व्यक्ति अपनी दिनचर्या में सोने के समय और जागने के समय का नियोजन कर लेता है उसके दिन और रात दोनों बड़े आनन्द से बीतते हैं। प्राणधारा का प्रवाह एक समान नहीं होता, बदलता रहता है। प्राणधारा का प्रवाह कभी हाथ पर होता है, कभी फेफड़े पर होता है, कभी लीवर पर होता है, कभी आंतों पर होता है, कभी मस्तिष्क पर होता है। प्राणधारा के प्रभाव के आधार पर हमारे कार्य का नियोजन होना चाहिये।

चौबीस घण्टे कार्य क्षमता एक जैसी नहीं रहती। एक समय कार्य करने की क्षमता दिमाग की होती है तो एक समय कार्य करने की क्षमता हाथों की होती है। एक समय पैरों की होती है। कब किस अवयव से काम लें, कब हाथ से काम लें, कब दिमाग से काम लें, कार्य क्षमता का भी अपना समय है। जो इस विज्ञान को जानता है, वह सफल हो जाता है।

रात्रि में जो भोजन खाया जाता है उसका सम्यक् पाचन नहीं होता। हमारे पाचन तंत्र का और सूर्य के प्रकाश का बहुत गहरा सम्बन्ध है। सूर्य की रश्मियां धरती पर आती हैं, प्रकाश फैलता है। सूर्य का ताप आता है तो हमारा पाचन तंत्र सक्रिय बनता है। जब सूर्य चला जाता है, अंधेरा छा जाता है, उस समय पाचन तंत्र निष्क्रिय हो जाता है। निष्क्रिय अवस्था में जब खया जाता है तब पाचन कम होता है और वहां बीमारी के लिए अवकाश होता है।

पाचन तंत्र की सक्रियता और निष्क्रियता कर सूर्य के साथ गहरा सम्बन्ध है। जब सूर्य चला जाता है तो तापमान में अन्तर आता चला जाता है। कम तापमान की अवस्था में नींद की स्थिति बनती है। रात को आलस्य भी आता है, प्रमाद भी आता है, निष्क्रियता भी आती है। भोजन का समय है दिन का समय। दिन में भी जब सूर्य मध्य आकाश में आ जाये, प्रकाश पूरा फैल जाए, तापमान अच्छा हो जाए तब हमारा पाचन तंत्र सक्रिय होता है। शायद इसलिए बारह बजे के आसपास का समय सबसे उचित माना गया है।

पानी का भी अपना समय होता है। पानी पहले भी पीया जा सकता है। भोजन के बाद भी पीया जा सकता है किन्तु उसका भी एक समय है। भोजन से आधा घण्टा पहले पानी न पीया जाए। भोजन के तत्काल बाद आधा-एक घण्टा भी पानी न पीया जाए। पानी का अलग समय है, खाने का अलग समय है। कुछ लोग भोजन के बीच में पानी पी लेते हैं। कुछ लोगों की आदत है कि भोजन करते ही पानी पी लेते हैं। वह पानी पीने का समय नहीं है।

समय प्रबंधन की दृष्टि से विचार करें तो 'काले कालं समायरे' सूत्र पर गहरा चिन्तन करना चाहिये। जिस समय जो काम करना हो उस समय वह काम करें। समय तो है भोजन का और पढ़ने बैठ गया, यह उचित नहीं है। समय है स्वाध्याय का और खाने बैठ गया, यह उचित नहीं है। बहुत महत्त्वपूर्ण है चेतना का नियोजन समय के नियोजन के साथ हो। जो काम जिस समय करना है, उसी समय करूंगा, ऐसा संकल्प सफलता के लिये, स्वास्थ्य के लिये और विकास के लिये बड़ा महत्त्वूपर्ण होता है।

व्यवहार की दृष्टि से भी विचार करें- जो काम जिस समय करने का होता है उस समय वही काम किया जाए तो उपयुक्त लगता है। दस बजे प्रवचन का समय है। यदि कहा जाए चलो, पहले भोजन करेंगे और प्रवचन बाद में सुन लेंगे तो बाद में कौन सुनेगा और कौन बोलेगा? जो व्यक्ति समय का नियोजन करना नहीं जानते, ठीक समय पर काम करने की कला को नहीं जानते, वे अनेक बार हास्य के पात्र बन जाते हैं।

प्राणधारा का प्रवाह एक समान नहीं होता, बदलता रहता है। प्राणधारा का प्रवाह कभी हाथ पर होता है, कभी फेफड़े पर होता है, कभी लीवर पर होता है, कभी आंतों पर होता है, कभी मस्तिष्क पर होता है। प्राणधारा के प्रभाव के आधार पर हमारे कार्य का नियोजन होना चाहिये। मनुष्य की कार्यक्षमता और भावना समय के साथ बदलती रहती है।

किसी व्यक्ति को कोई नया चिन्तन करना है तो उसके लिए कौनसा समय उपयुक्त है? नौ से दस बजे का समय नये चिन्तन के लिए बहुत बढ़िया समय होता है। कोई रचनात्मक काम करना है, कोई विश्लेषण करना है तो उसके लिये दस से बारह बजे का समय बहुत उपयोगी होता है। यह बहुत बड़ा विज्ञान है। जो स्वरोदय के विशेषज्ञ हैं वे स्वर के आधार पर इस प्रकार की घटना करते हैं कि चमत्कार जैसा हो जाता है।

प्राचीनकाल में कागज इतने सुलभ नहीं थे। कागज लिखने की कोई परम्परा नहीं थी। आज तो कागज इतने बन गये कि अपव्यय ज्यादा होता है पर उस समय कागज सुलभ नहीं थे। सारा ज्ञान कण्ठस्थ रहता था। जैसे पूर्वे के विशाल ज्ञान का विवरण मिलता है। यदि उसे लिखा जाये तो एक पुस्तक प्रेक्षा विश्व भारती में रखी जाए, फिर दूसरी-तीसरी रखें तो दिल्ली, कलकत्ता भी आ जायेगा। इतनी बड़ी विशाल ज्ञान राशि कण्ठस्थ थी।

एक कला थी और कला के साथ स्मृति का विकास था। स्मृति के विकास में समय नियोजन का महत्त्वपूर्ण हिस्सा था। वे जानते थे कि किस समय क्या करना चाहिये। उनको ज्ञान था कि अमुक तारा नक्षत्र अब इस स्थिति में है। इस समय यह कार्य किया जाए। काल के विशेषज्ञ मुनि होते थे। हमारी प्राचीन परम्परा में एक मुनि, जिनका काम था काल का निरीक्षण करना, समय का निरीक्षण करना। वे कहते, उसी प्रकार सारे मुनि अपनी दिनचर्या का अनुसरण करते थे। उनका बड़ा महत्त्व था। काल को बताने वाला न हो तो समय का सम्यक् नियोजन कैसे हो।

चौबीस घण्टे कार्य क्षमता एक जैसी नहीं रहती। एक समय कार्य करने की क्षमता दिमाग की होती है तो एक समय कार्य करने की क्षमता हाथों की होती है। एक समय पैरों की होती है। कब किस अवयव से काम लें, कब हाथ से काम लें, कब दिमाग से काम लें, कार्य क्षमता का भी अपना समय है। जो इस विज्ञान को जानता है, वह सफल हो जाता है।

यदि सूक्ष्मता से निरीक्षण किया जाये तो निष्कर्ष आएगा- जो लोग जल्दी उठने वाले हैं, उनमें नकारात्मक विचार कम आएंगे। जो देरी से उठने वाले हैं उनमें नकारात्मक विचार ज्यादा आयेंगे।

सफलता के लिये द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव और भव इन पांचों पर विचार करना चाहिये। एक क्षेत्र ऐसा होता है जहां जाते ही मन प्रसन्न हो जाता है। एक क्षेत्र ऐसा होता है जहां जाते ही अकारण ही उदासी आ जाती है। क्षेत्र की ऊर्जा भी काम करती है। उस क्षेत्र के परमाणु भी प्रभावित करते हैं। प्रेक्षा विश्व भारती में लोग आते हैं। अनेक लोगों ने बताया- पांच दिन के लिये आये, दो महीना हो गए, जाने का मन ही नहीं करता है। क्षेत्र का अपना प्रभाव होता है। काल का भी प्रभाव होता है। भावना का भी प्रभाव होता है। भावना किस प्रकार की है, भावना का भी समय के साथ सम्बन्ध है।

अपने भीतर जाने के लिये बहुत बढ़िया समय है रात को बारह बजे से दो बजे तक तथा चार बजे से सूर्योदय तक का समय। ये दो समय हैं आत्मा के द्वारा आत्मा को देखने के।

अब आप शब्द रंजन समाचार पत्र इस लिंक पर भी पढ़ सकते हैं- https://thetimesofudaipur.com/shabd-ranjan/

क़मर मेवाड़ी के नाम साहित्यकारों के पत्र (1)

कविता और कहानी लेखन के साथ 'सम्बोधन' पत्रिका के सम्पादक के रूप में क़मर मेवाड़ी सुचर्चित नाम है। अपने लेखन द्वारा कांकरोली जैसे छोटे से कस्बे को उन्होंने विशिष्ट पहचान दी है। देश के दिग्गज लेखकों के साथ साहित्य के विभिन्न सवालों तथा समस्याओं को लेकर समय-समय पर उनके जो पत्राचार हुए उससे पत्र-साहित्य विधा एक निराले रूप में समृद्ध हुई है।

(1) नंद चतुर्वेदी के दस पत्र

यहां उनके नाम प्राप्त अनेक पत्रों में से क्रमश: कुछ चुनिन्दा पत्र प्रकाशित किये जा रहे हैं।

हिन्दी के ख्यात कवि नंद चतुर्वेदी के ये 10 पत्र उन्होंने अपने निवास 30, अहिंसापुरी, उदयपुर से जून सन् 1995 से लेकर फरवरी 2011 के बीच के लिखे पोस्टकार्ड हैं।

(1)

07 जून 1995 का लिखा यह पत्र –

प्रिय क़मर

बहुत दिनों से, कहें 21 अप्रेल के बाद से तुम्हारे कोई समाचार नहीं। क्या बात है ? खैरियत तो है। यहां मनमोहन ठाकौर आए हैं। पुराने दोस्त हैं। हैं तो वे बून्दी के फिर कलकत्ता चले गये। अब उनके बेटे के साथ दिल्ली रहते हैं। यहां उनके साले साहब हैं। उनसे (पत्नी सहित) मिलने आए हैं। मैं मिलने गया तो तुम्हारे लिये पूछ रहे थे। मिलना कहते हैं। दिल के मरीज हैं। चलना-फिरना मना है। 'सम्बोधन' के लिये बातचीत करलें। भानावतजी (डॉ. महेन्द्र) मकान बनाने में लगे हैं। तुम उदयपुर आओ तो बताना और सालगिरह के मौके पर लिये फोटो भी मिल गए हैं।

तुम्हारा
नंद चतुर्वेदी

(2)

15 मार्च 1997 का लिखा यह पत्र –

प्रिय क़मर

तुम्हारा पोस्टकार्ड अभी-अभी मिला। यह कैसे होता है। पहले भी हुआ था कि तुम्हें याद करता हूं, पत्र लिखने की इच्छा होती है कि तुम्हारा पत्र मिलता है। मैं इसे जादू ही मानता हूं। मैं इच्छा करूं और तुम्हारा पत्र मिले। अभी तक इस कार्ड के पहले भेजा गया पत्र नहीं मिला है और न चित्र ही मिला है लेकिन भेजा है तो मिलेगा। पत्र आजकल देर से मिलते हैं। पहले भी तुम्हारा एक पत्र देर से मिला था।

आजकल राजेन्द्र सक्सेना बहुत अस्वस्थ चल रहे हैं। उनका प्रोस्ट्रेट बढ़ गया। एकबार आठ वर्ष पहले ऑपरेशन हुआ था, अब फिर बढ़ गया। 01 फरवरी को अस्पताल भर्ती हुए फिर कुछ ठीक हुए तो घर भेज दिया। यहां घर आकर वे फिर अस्वस्थ हो गए। बहुत कम खाना खाने के कारण वे कमजोर हो गये हैं। डेढ़ महीना हो गया है। नली से पेशाब होता है। बहुत चिन्ता है।

मैं 'निराला समारोह' में शरीक होने कोटा गया था। 'नयापथ' का निराला पर सुन्दर अंक निकला है। नरेन्द्र (निर्मल) वाले समारोह के बाद तुमसे मिलना नहीं हुआ है। अकादमी का लेखक सम्मेलन हुआ था। उन पर किसी का अब दबाव नहीं रह गया है।

तुम्हारा
नंद चतुर्वेदी

(3)

07 जुलाई 1997 का लिखा गया यह पत्र –

प्रिय क़मर

तुम्हारा पत्र- शुक्रिया। तुम्हारे निर्णय से मैं परिचित था। तब भी तुमसे पूछ लेना था, यह सम्पादक महोदय की अनुमति है। तुम्हें सेवामुक्त हुए एक सप्ताह हो गया। ऐसे एक-एक दिन गुजर जाता है। तुम्हारे लिये यह सवाल नहीं है 'अब तुम क्या करोगे ?' बल्कि अब तुम शुरू करोगे जो अब तक नहीं कर रहे थे। अब किसी के दबाव भी नहीं होंगे।

नंदजी के अमृत महोत्सव पर मंचासीन डॉ. महेंद्र भानावत, नंद बाबू और क़मर मेवाड़ी

अब पत्रिका पर भी ज्यादा ध्यान दोगे और सामाजिक जीवन को भी गम्भीरता से देख सकोगे। मैं इस उत्तर जीवन की प्रसन्नता की कामना करता हूं। मोहन भाई (अणुव्रत विश्व भारती राजसमंद के संस्स्थापक) की पत्नी का निधन समाचार बेहद तकलीफ देने वाला रहा। क्या करें। आदमी फिर अकेला रह जाता है, असहाय भी।

तुम्हारा
नंद चतुर्वेदी

(4)

09 जून 1999 का लिखा यह पत्र –

प्रिय भाई क़मर

60वीं सालगिरह के लिये बहुत-बहुत बधाई। तुम्हारा लेखन, सम्पादन, तुम्हारा स्नेह, तुम्हारी जिन्दादिली हमारे लिये गर्व करने की बात है। तुमने एक छोटे से कस्बे को पहचान और रोशनी दी है। कई उतार-चढ़ाव और उम्मीदों-नाउम्मीदों के बीच तुम्हारी साहित्य यात्रा अथक चली है, यह तुम्हारे सभी मित्रों के लिये प्रेरणास्पद रहा है।

11 तारीख को आना शायद सम्भव नहीं होगा लेकिन तुम्हारे दीर्घ जीवन की कामना करता हुआ मैं तुम्हारे साथ रहूंगा। 'डरा हुआ हिन्दूत्व' जितना कुछ था वह टाइप करने के लिये दिया है। शायद कल तक मिल जाएगा। डाक से भिजवा दूंगा। लेख के लिये जगह रखना। आज भास्कर में नंदवाना (डॉ. लक्ष्मीनारायण) के खिलाफ लम्बी खबर छपी है। तीसरे पेज पर- बधाई।

तुम्हारा सस्नेह
नंद चतुर्वेदी

(5)

27 अक्टूबर 2000 का लिखा यह पत्र –

प्रिय क़मर भाई

आपके अभिनन्दन कार्ड के लिये अनेक-अनेक धन्यवाद। आपके असीम स्नेह के लिये मैं हृदय से आभारी हूं। दीवाली का यह मांगलिक पर्व मन को खुशियों से जगमगा दे। आप, श्रीमती क़मर और परिवार स्वस्थ और प्रसन्न रहें।

'सम्बोधन' हममें रचना का नया उल्लास पैदा करे। आप एकबार फिर हमें अपनी सृजनशीलता से आश्वस्त करें और शोषणमुक्त समाज बनाने की प्रेरणा दें। परिवार के सभी सदस्यों को शुभकामनाएं।

स्नेहाधीन
नंद चतुर्वेदी

(6)

16 मार्च 2001 का लिखा यह पत्र –

प्रिय क़मर

रांघेय राघव पुरस्कार से सम्मानित हुए यह मेरे लिये बहुत प्रसन्नता की बात है। पुरस्कार से प्रतिभा और कृति दोनों ही प्रकाश में आती है और पुस्तक पढ़ी जाती है। अब हमारा नुकसान यह हुआ कि आप कविता के खेमे से कहानी के खेमे में चले गये। आप इसी तरह सम्मानित होते रहें और छोटे स्थानों का महत्त्व बढ़ाते रहें।

मधुसूदनजी (पंड्या) की पुस्तक का काम आज पूरा कर दूंगा। हार्दिक बधाई के साथ।

तुम्हारा
नंद चतुर्वेदी

(7)

27 मई 2003 का लिखा यह पत्र-

प्रिय क़मर

आपका पत्र। खान सा. (डॉ. आलमशाह खान) का स्मृति अंक हम ही लोगों के आलेखों से महिमामय न हो ऐसा विचार उस दिन किया था। उसके मुताबिक आपने दूसरे और बाहर के कहानी लेखकों को पत्र लिखे होंगे- कमलेश्वरजी, राजेन्द्र यादव, स्वयं प्रकाश, हेतु भारद्वाज, नवल किशोरजी तथा अन्य कहानीकार, कहानी समीक्षक जिनकी खान सा. में दिलचस्पी रही है।

अगर उनकी बेटी श्रीमती तराना जो अंग्रेजी की प्रोफेसर हैं, यदि अपने पिता पर एक स्मृत्यालेख लिख सके तो हमारा अंक बहुत खास हो जाएगा। आप कोशिश करें। अंक हड़बड़ाहट में न निकालें। मुझे भी आप कुछ खान सा. से सम्बन्धित सामग्री भेजने वाले थे।

आज यहां भास्कर में वह समाचार छपा है जिसमें कथा शिविर को डॉ. आ. शा. खान स्मृति कथा शिविर करने का प्रस्ताव है। उदयपुर आवें तो मिलें।

तुम्हारा
नंद चतुर्वेदी

(8)

18 मई 2007 का लिखा यह पत्र-

प्रिय क़मर

तुम्हारा पत्र मिला। यह तुम्हारे अथक परिश्रम का ही फल है कि हमारे प्रान्त को गर्व करने जैसी साहित्यिक पत्रिका पढ़ने का दुर्लभ अवसर मिला है। 'सम्बोधन' को तुमने किसी तुच्छ तृष्णा या हीन आकांक्षा का माध्यम नहीं बनाया। दूसरों की सर्जना को प्रकाशित करना और उनकी कीर्ति को चारों तरफ फैलने देना यह मुश्किल काम तुम चालीस और एक वर्ष तक करते रहे- तुम्हारा अभिनन्दन। नया अंक तो नहीं मिला। शायद फिर भेजना पड़े।

संस्मरण लिखने की जरूर कोशिश करूँगा। आखिरी वक्त पर ही टॉय-टॉय फिस्स हो जाती है। अबकी बार नहीं होने दूंगा। भाई भागीरथ (भार्गव) का श्रद्धांजलि-लेख और अन्तिम कविता छाप सकें तो देख लें। प्रसन्न रहें।

तुम्हारा
नंद चतुर्वेदी

(9)

29 नवम्बर 2010 का लिखा यह पत्र –

सम्मान्य भाई क़मर मेवाड़ी

आचार्य निरंजननाथ सम्मान समारोह का निमंत्रण पत्र मिला। अनेक धन्यवाद।

अगर दोहते की शादी में न जाना होता तो गैर हाजिर न रहता। मुझे याद नहीं आता कि इस महत्त्वपूर्ण अवसर पर मैंने कभी छुट्टी की एप्लीकेशन दी हो। कल की गाड़ी से भरतपुर जाऊंगा जहां दो दिसम्बर को शादी है। छह तारीख को उदयपुर लौट आऊंगा।

निरंजननाथ सम्मान समारोह हिन्दी के गरिमापूर्ण समारोह की श्रेणी में गिना जाने लगा है। इसका श्रेय कर्नल सा. (देशबंधु आचार्य) और क़मर मेवाड़ी को है। दोनों के बीच जो मित्रतापूर्ण और समझदारी का व्यवहार है वह अनूठा और अनुकरणीय है।

इस बार के सम्मान प्राप्त करने वाले आ. भाई जनमेजय हिन्दी के प्रथम श्रेणी के व्यंग्य लेखक हैं। मैंने उनकी कुछ व्यंग्य रचनाएं पढ़ी हैं। उन्हें मेरी बधाई दें। आ. भाई (विष्णु) नागर हमारे मेहमान हैं और वेदजी (वेद व्यास) अध्यक्ष, भगवती बाबू (डॉ. भगवतीलाल व्यास) विशिष्ट अतिथि, यह साहित्य का अद्‌भुत संगम होगा। मेरी शुभकामनाएं।

तुम्हारा
नंद चतुर्वेदी

(10)

12 फरवरी 2011 का लिखा यह पत्र-

प्रिय क़मर

कोलकाता से छपने वाला 'छपते-छपते' का दीपावली अंक कल मिला। इसमें तुमने मेरे बारे में छोटा-सा लेकिन बहुत खूबसूरत दोस्ताना बल्कि आत्मीय संस्मरण लिखा है। हमारी पीढ़ी के लोगों को न दिल्ली जाने का मौका मिला न मुम्बई, यहीं कुटते-पिटते रहे। जैसे भी होना था हुए। भले-बुरे काबिल-नाकाबिल।

'छपते-छपते' का अंक देखकर मैं विस्मय में पड़ गया। कितना वजनी, कितना तगड़ा। लोकमत समाचार का दीवाली विशेषांक दो खण्डों में निकला। ऐसा ही तन्दुरस्त तगड़ा। शुक्रिया, क़मर!

तुम्हारा
नंद बाबू

पोथीखाना

युवा पीढ़ी की प्रेरक 'विश्ववंद्य विभूतियां'

डॉ. पूरन सहगल मुख्य रूपेण लोकसाहित्य के अध्येता हैं। इनकी लिखी 98 पुस्तकें प्रकाशित हैं। 'विश्ववंद्य विभूतियां' मध्य भारतीय इतिहास अनुसंधान, प्रतिष्ठान ग्वालियर ने प्रकाशित की है। पुस्तक में भारत की नौ विभूतियां समाहित हैं।

इन विभूतियों में महात्मा गाँधी के स्वतंत्रता आंदोलन की लोक स्वीकृति के अतिरिक्त सरदार वल्लभभाई पटेल, डॉ. राजेन्द्रप्रसाद, योगी एवं क्रांतकारी अरविंद घोष, लालबहादुर शास्त्री, सरोजिनी नायडू, अटलबिहारी वाजपेयी, इंदिरा गाँधी और पं. महावीरप्रसाद द्विवेदी का कृतित्व और व्यक्तित्व वर्णित है। पं. महावीरप्रसाद द्विवेदी के अतिरिक्त शेष आठ का सम्बंध भारत की स्वतंत्रता क्रांति से

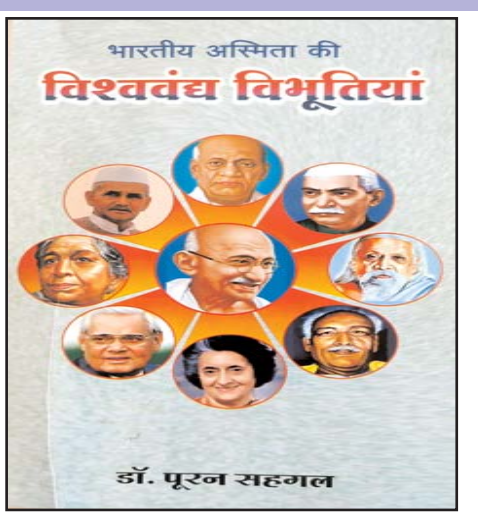

है। डॉ. सहगल के अनुसार जिस प्रकार सागर को गागर में भर लेना अथवा सूरज को मुट्ठी में कैद कर लेना सम्भव नहीं होता उसी प्रकार इन आकाशधर्मी विभूतियों के जीवनचरित्र को कुछ पृष्ठों में समाहित कर पाना भी बहुत कठिन है।

डॉ. सहगल ने अत्यंत संयत रूप से यह कार्य किया है। इन सभी विभूतियों को कुछ पृष्ठों में अभिव्यक्त कर यह प्रयत्न किया है कि कुछ महत्त्वपूर्ण संदर्भ छूटने न पाए। भले ही उसका छाया भाव ही क्यों न उल्लेखित करना पड़े।

ये सभी विभूतियां भारत के मुक्ति आंदोलन की अजय योद्धा तो हैं ही इनका योगदान भारत के स्वतंत्र्योत्तर काल में संयोजन एवं विकास को गतिमान करना भी है। ये सभी परस्पर एक दूसरे के कार्यों के पूरक-सहयोगी और सहमत रहे हैं।

इन विभूतियों को पढ़कर युवा पीढ़ी अपने गौरवशाली स्वर्णिम इतिहास को समझे। उसमें राष्ट्रीयता का भाव जागृत हो। उनकी राष्ट्रीयता, उनका त्याग, बलिदान तथा देशाभिमान जानकर युवा स्वयं में ऐसे भावों को जागृत कर पाएं।

डॉ. सहगल की रोचक शैली, सहज वाक्य विन्यास और भावाभिव्यक्ति के रहते यह पुस्तक एक अनुपम उपहार है। स्कूली स्तर से लेकर महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों को यह पुस्तक पढ़ने को मिले ऐसा प्रयत्न होना चाहिए।

-डॉ. प्रद्युम्न भट्ट

स्मृतियों के शिखर (177) : डॉ. महेन्द्र भानावत

ओपमा लोकधर्मी प्रदर्शनधर्मी कलाओं की

सृष्टि की रचना के पीछे बड़ा अद्‌भुत इतिहास छिपा है। धरती, आकाश, हवा, पानी सबके सब एक-दूसरे से बंधे हुए हैं। आकाश को वायु ने थाम रखा है तो वायु को धरती थामे हुए है। धरती को शेषनाग अपने पर टिकाये हुए है तो शेषनाग कश्यप पर आसीन है। कश्यप पानी पर थमा हुआ है। यह कश्यप तीन सौ सत्ताईस योजन का है। एक योजन सौ कोस का कहा गया है। पानी में बड़ी जबर्दस्त ताकत होती है। इसी ने सारी सृष्टि संभाल रखी है। हमारे यहां महाप्रलय कभी नहीं हुआ। खण्ड प्रलय तो कई बार हुए। शेषनाग और कश्यप कभी मृत्यु को प्राप्त नहीं हुए। ये दोनों मृत्युंजय हैं।

इन सबके केन्द्र में शरीरधारी मनुष्य है जो सर्वश्रेष्ठ ज्ञानधारी कहा गया है। उसी ने सृष्टि के रहस्यों, चमत्कारों बनती-बिगड़ती धाराओं और दृश्य-अदृश्य होते कलात्मक रूपों तथा कौशलजनित कर्मशीलता से विविध कला-शिल्पों को जन्म दिया। लोककला भी इनमें से एक है। सृष्टि का कोई उपादान, कोई तत्व, कोई रूप-सरूप, आधार-आलम्बन अपने अकेले में कोई अस्तित्व नहीं रखता। सर्वत्र समूह की सत्ता स्वीकारी गई है इसीलिए सबका सबके साथ सबके लिए आपसी अन्त: संबंध मुख्य है जो पूर्णता को परिभाषित करता है।

रहस्यों के इन घेरों में जो खुली मुट्ठी नहीं हो पाये उन्हें मनुष्य ने पराशक्ति का रूप दिया। यही कारण है कि उसके हर कला कौशल में ईश्वरत्व अथवा देवत्व का वास विद्यमान स्वीकार किया गया है। इससे कला चाहे आदिवासियों की हो या अन्य कौमों की, उसके मूल में उस परमसत्ता के प्रति अटूट विश्वास, अखूट आस्था की उपजीव्यता पूर्णरूपेण लक्षित मिलेगी। उदाहरण के लिए आदिवासी भीलों के गवरी नृत्य को ही लें। कहने को यह उनका नाच-नृत्य है किंतु इसके मूल में जो कथा-बीज है वह सृष्टि के उद्‌भव को उत्खनित करता है। सृष्टि नियंता शिव-पार्वती के प्रतिनिधि के रूप में भोपा पूरे खेल में उपस्थित रहते अपनी शिव स्वरूप बुड़िया तथा पार्वती-शक्ति स्वरूप दो राइयों की उपस्थिति दिये रहता है। दिनभर प्रदर्शित होने वाले इस प्रदर्शन में कई स्वांग, कई ख्याल, कई खेल तथा लीला दृश्य देखने को मिलते हैं। इनमें सामाजिक और जंगलजीवी संपूर्ण आदिवासी जीवनधारा का सांगोपांग दरसाव भी है।

भाद्रपद में रक्षाबंधन के बाद से शुरू होकर गवरी नृत्य पूरे चालीस दिन गांव-दर-गांव भीली सदस्यों की भागीदारी के साथ उनके व्रत, अनुष्ठान, संयम, बह्मचर्य, खुशहाली, सुकाल की व्याप्ति के मनौतीपूर्ण संस्कारों की सांगोपांग परिदर्शना देता है। थाली और मादल की गूंज देता यह नृत्योत्सव प्रत्येक राहगीर को अपनी ओर आकर्षित कर उन्हें खुशहाल जीवन जीने की सुगंध का छींटा देकर जनकल्याण का कारक बनाता है।

बगड़ावत लोक महाभारत में एक किस्सा आता है कि सर्वश्रेष्ठ फूल कौनसा है। यों तो नामधारी फूलों में से ही श्रेष्ठ का चयन करना होगा किंतु वहां फूल वही नहीं है जो फूल नामधारी है। श्रेष्ठ फूल वह है जो उपयोगी है जिसके बिना जीवन का तारतम्य नहीं जुड़ पाता है। सर्वश्रेष्ठ फूल है गाय जिस पर सारी अर्थ व्यवस्था टिकी हुई है। उसके बछड़ों के बल पर ही पूरी कृषि निर्भर है। सर्वश्रेष्ठ फूल है घोड़ी जिसकी शक्ति पर राज्य टिके हुए हैं। सर्वश्रेष्ठ फूल है सूरज जिसके निकलते ही नर-नारी काम पर लग जाते हैं। सर्वश्रेष्ठ फूल है कपास जिसके कपड़े से संसार अपना तन ढकता है। सर्वश्रेष्ठ फूल है वर्षा जिसके अभाव में सारे फूल कुफूल हो जाते हैं। युगयुगीन सन्दर्भ में देखें तो समय बड़ा बलवान होता है। आज की स्थिति में यदि आदिवासी क्षेत्र में पूछना करें तो वहां सर्वश्रेष्ठ फूल है महुए का जिसका अंग-प्रत्यंग ही नहीं, छांह और छाया तक जीविकोपार्जन के लिए जरूरी है। सर्वश्रेष्ठ फूल है शिक्षा जिसके बिना विकास की बात नितान्त बेमानी लगती है।

लोक अर्थात् जनमानस के कंठ पर आसीन साहित्य ही लोकसाहित्य है। इस कंठासीन साहित्य से तात्पर्य मौखिक अथवा वाचिक साहित्य से है। यह साहित्य परम्पराशील होता है और उन लोगों में व्याप्त होता है जो दिखावे से दूर सहज प्रवृत्तियों में संस्कारित होते हुए परिपाटीगत आस्था एवं विश्वासों की डोर में बंधे सामूहिक जीवन के सहयात्री होते हैं। वे समष्टिगत धर्म-कर्म तथा अध्यात्म-अनुष्ठान के जीवनचक्र से बंधी लोकमानसीय प्रज्ञा-मनीषा के महत्वपूर्ण हिस्से होते हैं। उनका व्यक्ति गौण होता है। वे समग्रत: लोक के वशीभूत होते हैं। यही कारण है कि उनमें प्रचलित गीत, नाट्य, कथा, वार्ता, प्रहसन, नृत्य, शिल्प, चितरावण सब लोक की लोकरंजित लोकमान्य रचना होती है। उसका रचनाकार व्यक्ति होते हुए भी वह गौण होता है। गौण होता रहता है। गौण होता हुआ लगता है और कभी-कभी समूह मिश्रित मिथक बन रह जाता है।

ऐसा भी होता है जब कोई रचनाकार अपने को अज्ञात एवं अनाम रखकर जो कुछ रचना वह करता है उसे लोक में पराये हाथों कर देता है। अपनी रचना को अपने नाम से चलायमान करने से लोक में उसकी पकड़ अत्यंत ढीली पड़ जाती है जबकि वही रचना बिना किसी रचनाकार की छाप के यदि लोक में प्रवाहित कर दी जाय तो उसका असर निश्चय ही दूसरे ढंग का होगा। लोक में ऐसे कई रचनाकार मिलेंगे जिन्होंने अपनी रचनाओं को बेहिचक अनाम रखा और उसे लोक की धरोहर होने दिया।

किसी का रचा हुआ साहित्य लोक में जाकर रूपान्तरित हो जाता है। कहीं शब्द बदल जाता है तो कहीं पूरी पंक्ति ही नई जुड़ जाती है। कई बार एक छंद अनेकों द्वारा, एक ही समय, एक ही जगह रचता रहता है। आदिवासियों में जब गायक-नर्तक जुड़ते हैं तब स्वत: ही गीतों की धाराएं स्फुरित होती रहती हैं। एक पंक्ति किसी ने उच्चरित की तो दूसरी पंक्ति कोई दूसरा उच्चरित करता पाया जाता है। ऐसे पंक्तियां जुड़ती रहती हैं। गायक रात-रात भर गाते रहते हैं। पहले से कुछ भी लिखा, सुना, समझा नहीं होते हुए भी कैसे कोई कड़ावा, कोई पंक्ति गंगा की तरह खलक पड़ती है। दूसरी ओर मीरां, चन्द्रसखी, सूर, तुलसी और अन्य कई ऐसे नाम हैं जिनकी छाप के पद, गीत, भजन कई गायक जातियों और कलाकारों की जबान पर चढ़े हुए हैं। रात्रि जागरण, विशिष्ट बैठकों, गायक मण्डलियों का जहां भी जुड़ाव होता है, वहां कंठासीन साहित्य की धाराएं स्वत: स्फूर्त हो घुमड़ती रहती हैं।

एकबार चित्तौड़ जिले के सावा गांव में एक बारात पहुंची। अर्धरात्रि को फेरे के दौरान दूल्हे के कानों में दूर प्रदर्शित हो रहे तुर्राकलंगी ख्याल की धुन टकराई। दूल्हे को लगा कि ढोलक का ठेका ठीक नहीं लग रहा है। वह तत्काल चंवरी छोड़ उस धुन के सहारे प्रदर्शन स्थल पहुंचा और मंच पर लावणी गान द्वारा ढोलकवाले को इशारे में समझा दिया। ढोलक वाले ने सही स्थिति संभालली और उस ख्याल में नई रंगत डालदी।

लोकनाट्य प्रदर्शन में तो पूरा गांव ही हर तरह की व्यवस्था में लग जाता है। महीने भर पहले से तैयारियां शुरू हो जाती हैं। हरिजन सफाई करता है। भिश्ती पानी का छिडकाव करता है। बनिया पात्रों की पोशाक के लिए कपड़ा देता है। रंगरेज रंगाई का काम करता है। दर्जी पोशाक सीने का काम करता है। धोबी उस्तरी करता है। तेली तेल देता है। नाई मशाल जलाये रखता है फिर मंच को सजाने में कई लोग जुटते हैं। अच्छे से अच्छे कलाकार वादक जुड़ते हैं। दर्शक सारे खेल और उसकी भावभंगिमा से परिचित रहते हैं। पात्रों की प्रस्तुति में जरा भी ढिलाई दर्शकों को स्वीकार्य नहीं होती। नाटक लिखने वाला तो केवल शब्द देता है। उसका नाटक तो किताबों में बंद रहता है। उसकी प्रस्तुति में लोक की यदि इतनी भागीदारी नहीं हो तो वह नाट्य नहीं बन सकता।

गांव की चौपाल या फिर देवरा-मंदिर भी मुख्य प्रदर्शन स्थल होता है। कई बार देवता की स्वीकृति से नाट्य प्रदर्शन, जुलूस या फिर अन्य धर्म-अध्यात्म से जुड़े लोकानुरंजन होते हैं। देवता के प्रतिनिधि के रूप में भोपा ही गांववालों के हर कार्य-व्यापार का नियंता होता है। देवता भोपे के शरीर में आकर दरसन देता है और हर बीमारी, हर समस्या का निराकरण करता है। सामूहिक रूप से भी लोग मिलकर देवता के फरमान का अक्षरश: पालन करते हैं। गांव में कभी पशुओं को बीमारी लग गई या वहां के निवासी किसी बीमारी या अनिष्ट से घिर गये तब देवता ही उनकी रक्षा करता है। ऐसा भी हुआ है जब भोपे द्वारा आदेश पाकर ग्रामीणजनों ने पूरा-का-पूरा गांव ही छोड़ दिया। लोक की ऐसी आस्था, देवता के प्रति ऐसा समर्पण और विश्वास अच्छे पढ़े-लिखों में भी देखने को मिलता है।

लोक की यह आस्था ऐसे ही नहीं जुड़ती, पनपती और जीवनाचार का निर्वाह करती है। इसके पीछे कोई न कोई देव-आस्था, चमत्कार अथवा फल प्राप्ति का ही वरदान होता है। इस दृष्टि से लोककला के जितने भी रूप हैं, लोकशिल्प के जितने भी सरोकार हैं, लोकचित्रकारी के जितने भी सोपान हैं, उन सबके मूल में समूहबद्ध धर्माराधना के ही सूत्र सुगठित हुए मिलते हैं। मेवाड़ का रासधारी ख्याल कृष्णकथा से सम्बन्धित नहीं होकर रामकथा को चरितार्थ करता है। इसमें जगह-जगह रचनाकार तुलसीदास के नाम की छाप है किन्तु तुलसी रचित एक भी चौपाई उसमें नहीं मिलती और न रामचरित मानस का आधार मिलता है। ऐसी असंख्य रचनाएं मिलेंगी जिन पर मूल लेखक का नाम नहीं होकर चर्चित रचनाकारों के नाम मिलते हैं।

स्थानीय अथवा आंचलिक जीवनधर्मिता, संस्कृति तथा बोली का प्रभाव पड़ने के कारण लोकरंजन की ये कलाएँ आंचलिकता के रंग में रंगकर इतना जबर्दस्त प्रभाव ग्रहण कर लेती हैं कि वे उसी नाम से चल पड़ती हैं। राजस्थान के चिड़ावी, शेखावाटी, नागौरी, मेवाड़ी, मारवाड़ी , किशनगढ़ी नाम से जो ख्यालों की रंगतें अथवा रंगविधाएँ प्रचलित हैं उनके पीछे यही पक्ष प्रमुखता लिये है।

किसी भी अंचल की भाषा अथवा बोली की जीवनीशक्ति और उसके सांस्कृतिक बोध को जानना और तदनुकूल अध्ययन करना बहुत जरूरी है। इसके बिना किया गया अध्ययन कभी-कभी बड़ा हास्यास्पद और अर्थ का अनर्थ करने वाला होता है। उदाहरण के लिए आकाशवाणी जयपुर से राजस्थानी में समाचार का प्रसारण करते समय एकबार वाचिका पंजाबी लडकी ने 'पद्‌मश्री से अलंकृत करने' की बजाय 'पद्‌मश्री का गहना पहनाया' बोल दिया। वह अलंकृत को अलंकार यानी गहना समझ गई। किसी औरत को उसके पति द्वारा पहनाये जानेवाले आभूषण के रूप में तो गहना चर्चित है ही, जेल में कैदी को जो बेड़ी पहनाई जाती है उसके लिए भी गहना शब्द प्रयुक्त किया जाता है। ऐसे ही राजिया के सोरठे पढ़ाते समय एक कॉलेज प्रवक्ता ने राजिया को कवि बता दिया जबकि कवि द्वारा राजिया को सम्बोधित करते ये सोरठे रचे गये हैं। यही हाल मेवाड़ के संत चतुरसिंहजी द्वारा लिखे गये 'अलख पच्चीसी' के दोहों का हुआ जिसके प्रत्येक दोहे में उदिया को सम्बोधित करते हुए अंत में 'उदिया अलख पिछाण' कहा गया है।

वह लोकशक्ति ही है जो किसी भी शब्द को शक्ति देकर ताकतवर बनाती है या फिर उसे शक्ति विहीन भी कर देती है। इस दृष्टि से लोक में स्वीकार किया गया लोकसम्मत अर्थ ही महत्वपूर्ण होता है। इसके सामने शब्दकोश का अर्थ भी कभी-कभी, भौंडा और खोटा लगने लग जाता है। लोक में नये-नये शब्दों का निर्माण निरन्तर होता रहता है। उदाहरण के लिए प्रतिदिन नौकरी पर जाने और पुन: लौट आने वाले को डेली अपडाउन करने वाला कहा जाता है। राजस्थानी में इसके लिए अपडाउनिया शब्द प्रचलन में है लेकिन जो यहां की जीवनधर्मिता के रंग में रंगा हुआ होगा वही इसका यह अर्थ निकाल पायेगा।

लोक की कोई विधा हो, उसमें निरन्तर प्रयोग होते रहते हैं। एक दृष्टि से तो उसकी जीवनीशक्ति ही प्रयोगमूलकता है किन्तु यह प्रयोग स्वत: स्फूर्त, प्रकृति के अनुकूल होता है, किसी के करने से नहीं, जैसे किसी वृक्ष से बिना तोड़े कोई फूल-फल गिरता है और नये फूल-पत्ते आते हैं। कब कोई कली पकी, कब कोई फूल बना, खिला, खुशबू फैली, कुछ पता नहीं चलता। यही स्थिति लोकधर्मी प्रदर्शनकारी कलाओं की है।

समय की नब्ज को देखते हुए लोकसाहित्य-संस्कृति-कला के समुचित विकास के लिए बहुत सारे प्रयत्न अपेक्षित हैं किंतु हमारा ध्यान इन्हें अन्तर्राष्ट्रीय पहचान देने की ओर ही अधिक बढ़ रहा है जो ठीक नहीं है। सन् 1975 में मेरे संयोजन में भारतीय लोककला मण्डल की एक अखिल भारतीय संगोष्ठी में अध्यक्ष पद से अपने संबोधन में प्रख्यात लोकनाट्यवेत्ता जगदीशचन्द्र माथुर ने सुझाव देते हुए एक सशक्त मंच की आवश्यकता बताई और कहा कि सांस्कृतिक आदान-प्रदान की योजनाओं के अन्तर्गत कलादलों को विदेश भेजने की बजाय हमारे ही देश के विविध राज्यों में भेजना चाहिए ताकि हम अपनी कला-सांस्कृतिक विधाओं की जानकारी अपने देश में भली प्रकार दे सकें।

श्री माथुर ने यह भी सुझाव दिया कि लोककलाओं के समारोह जो प्राय: शहरों में आयोजित किये जाते हैं, वे ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक आयोजित हों ताकि स्थानीय कलाकारों में आत्मविश्वास बढ़ सके और इन कलाओं का महत्त्व भी वहां के लोगों में प्रकाशित हो सके। लोककलाकारों की आर्थिक स्थिति में सुधार लाने हेतु सरकारी अनुदान के साथ-साथ जन सहयोग से एक जनकोष की स्थापना पर भी उन्होंने बल दिया।

20वीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध तो गुलामी का ही अंधेरा लिये रहा। बाद की आधी शताब्दी आजादी का स्वप्न-सुख और स्वातंत्र्य चेतना मुखरित करने में व्यतीत हुई। इस बीच राजाओं के राज बदले। जमी जमाई व्यवस्था बदली। परम्पराओं में भी ठहराव और बदलाव का संक्रमण चला। अंचलों ने करवट ली। विकास के नाम पर बहुत सारा पुराना व्यर्थ करार दिया गया। घर बैठे रोशनी-पानी के आलम ने एक नई स्पर्धा तथा प्रतिभा-प्रज्ञा की राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय छलांग और भागमभाग की जीवनधारा दी।

ऐसे हतप्रभ एवं विस्मयकारी वातावरण में टीवी-लेपटोप-मोबाइल जैसे माध्यमों ने मनुष्य को पूरी दुनिया की चकाचौंध में बांध दिया तब बिचारी परम्पराजीवी लोककलाएँ कहां तथा कैसे अपना बचाव किंवा बनाव किये रहतीं? तब भी जो शेष रह गयीं वे अपनी गहरी जड़ों की गहन-सघन ताकत के बल अपना अस्तित्व ताने मुखर हैं। आने वाली शताब्दी में परम्परा के नाम पर पिछला कैसा क्या कुछ बचा भी रहेगा, कहना मुश्किल होगा।

सर्वश्रेष्ठ फूल है गाय जिस पर सारी अर्थ व्यवस्था टिकी हुई है। उसके बछड़ों के बल पर ही पूरी कृषि निर्भर है। सर्वश्रेष्ठ फूल है घोड़ी जिसकी शक्ति पर राज्य टिके हुए हैं। सर्वश्रेष्ठ फूल है सूरज जिसके निकलते ही नर-नारी काम पर लग जाते हैं। सर्वश्रेष्ठ फूल है कपास जिसके कपड़े से संसार अपना तन ढकता है। सर्वश्रेष्ठ फूल है वर्षा जिसके अभाव में सारे फूल कुफूल हो जाते हैं। सर्वश्रेष्ठ फूल है महुए का जिसका अंग-प्रत्यंग ही नहीं, छांह और छाया तक जीविकोपार्जन के लिए जरूरी है। सर्वश्रेष्ठ फूल है शिक्षा जिसके बिना विकास की बात नितान्त बेमानी लगती है।

लोकनाट्य प्रदर्शन में तो पूरा गांव ही हर तरह की व्यवस्था में लग जाता है। महीने भर पहले से तैयारियां शुरू हो जाती हैं। हरिजन सफाई करता है। भिश्ती पानी का छिडकाव करता है। बनिया पात्रों की पोशाक के लिए कपड़ा देता है। रंगरेज रंगाई का काम करता है। दर्जी पोशाक सीने का काम करता है। धोबी उस्तरी करता है। तेली तेल देता है। नाई मशाल जलाये रखता है फिर मंच को सजाने में कई लोग जुटते हैं। अच्छे से अच्छे कलाकार वादक जुड़ते हैं। दर्शक सारे खेल और उसकी भावभंगिमा से परिचित रहते हैं। पात्रों की प्रस्तुति में जरा भी ढिलाई दर्शकों को स्वीकार्य नहीं होती। नाटक लिखने वाला तो केवल शब्द देता है। उसका नाटक तो किताबों में बंद रहता है। उसकी प्रस्तुति में लोक की यदि इतनी भागीदारी नहीं हो तो वह नाट्य नहीं बन सकता।

लोककला के जितने भी रूप हैं, लोकशिल्प के जितने भी सरोकार हैं, लोकचित्रकारी के जितने भी सोपान हैं, उन सबके मूल में समूहबद्ध धर्माराधना के ही सूत्र सुगठित हुए मिलते हैं। स्थानीय अथवा आंचलिक जीवनधर्मिता, संस्कृति तथा बोली का प्रभाव पड़ने के कारण लोकरंजन की ये कलाएँ आंचलिकता के रंग में रंगकर इतना जबर्दस्त प्रभाव ग्रहण कर लेती हैं कि वे उसी नाम से चल पड़ती हैं।

शब्द रंजन
उदयपुर, सोमवार 01 जनवरी 2024

सम्पादकीय

अकादमियों को नई सरकार से उम्मीद

राजस्थान ही ऐसा प्रान्त है जहां सर्वाधिक अकादमियां हैं। सर्वाधिक होना संख्या की दृष्टि से तो ठीक है पर गुणवत्ता और उनके कामकाज के सम्बन्ध में समय-समय पर सवाल उठते रहते हैं फिर जो सरकार सत्तासीन होती है वह अपने ढंग से इन अकादमियों के संचालन में दखल करती है। अध्यक्षों की नियुक्ति अब तो शुद्ध राजनीतिपरक हो गई है। ये नियुक्तियां भी समय पर नहीं होतीं। इससे लगता है, सरकार की निगाह में साहित्य एवं कला अकादमियां प्राथमिकता में नहीं हैं।

इन अकादमियों द्वारा जो पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं वे भी बन्दरबांट जैसे लगते हैं। उनके निर्णायक कौन होते हैं, अज्ञात रहते हैं। ऐसा भी सुना गया कि उनके निर्णय बदल भी दिये जाते हैं कारण कि वे ठकुर सुहाते नहीं होते। कभी-कभी जब निर्णय घोषित होता है तो स्वयं निर्णायक भी चकित हुए लगते हैं। साहित्य अकादमी ने तो एकबार किसी पाण्डुलिपि पर ही सर्वोच्च पुरस्कार दे दिया। ऐसा अभूतपूर्व (!) निर्णय लेकर अकादमी ने अन्य अकादमियों से भिन्न पहचान अवश्य दे दी मगर कोई प्रशंसनीय कार्य नहीं कहा गया।

केन्द्र में इतनी अकादमियां नहीं हैं। वे एक ही जगह स्थित हैं और उनके कामकाज पर भी ऐसा हो-हल्ला नहीं सुना गया। वहां पुरस्कारों के निर्णायकों के नाम भी घोषित किये जाते हैं पर राजस्थान में भाषागत अकादमियों की बहार आने से उनका संविधान भी भिन्न प्रकार का है और सरकार जिन अध्यक्षों की नियुक्ति करती है वे भी उस अकादमी के अनुकूल नहीं होकर राजनीतिपरक नियुक्ति होने से ऊपर के आदेशों का ही अधिक पालन कर्त्ता होते हैं जिससे साहित्यकारों की उचित समस्यों का निराकरण नहीं हो पाता।

पिछले वर्ष, बचे खुले एक वर्ष के कार्यकाल के लिये ही अकादमी अध्यक्ष बनाये गये। इस कारण वर्ष भर के दौरान ताबड़तोड़ में जो कुछ हुआ, वह हो गया। साहित्य अकादमी के अलावा एक और अकादमी बालसाहित्य की स्थापित की गई जिसके लिये पहले से कोई योजनाबद्ध सोच नहीं था। सवाल यह उठा कि क्या साहित्य आकदमी के साहित्य में बालसाहित्य सम्मिलित नहीं है? फिर तो दलित साहित्य के हल्ले भी खूब हो रहे हैं तो एक अकादमी दलित साहित्य की हो। जनजातियों का साहित्य भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है तो क्या उसकी भी अलग से अकादमी हो!

एक अकादमी प्राकृत भाषा साहित्य की प्रारम्भ की गई। संस्कृत, उर्दू तथा राजस्थानी भाषा की अकादमियां पहले से हैं। प्राकृत भाषा का अभी चलन तो नहीं है पर उसका साहित्य हस्तलिखित ग्रन्थों में बहुत उपलब्ध है। सबसे महत्त्वपूर्ण तो हमारी लोककला और संस्कृति है जो हमारे जीवनधर्म के साथ जनजीवन की रग-रग में समाई हुई है। लोकभाषा, लोकगीत, लोकनाटक, लोकगाथा, लोक मुहावरे, लोकोक्तियां, लोकनृत्य, कठपुतली, गवरी जैसी प्रदर्शनधर्मी और भी विधाएं जो पूरे देश में प्रचलित हैं और सभी विश्वविद्यालयों में शोध की विषय बनी हुई हैं मगर आचर्श्य है कि पाठ्यक्रम में उनकी कोई जगह नहीं है। अलग से कोई अकादमी भी नहीं।

अब नई नवेली सरकार बनी है और अनेक उम्मीदों के साथ कुछ स्थायी एवं जनोपयोगी कार्य करने का संकल्प लिये है। हम उसका स्वागत करते हैं और उम्मीद करते हैं कि साहित्य-संस्कृति-कला के क्षेत्र में भी उत्कृष्टता को प्राथमिकता मिलेगी।

सभी साहित्यकारों, लेखकों, पाठकों, विज्ञापनदाताओं तथा शुभेच्छुओं को नववर्ष की हार्दिक बधाई।

प्रवर मिस्टर और रानू मिस फ्रेशर बने

उदयपुर (ह. सं.)। वैंकटेश्वर इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी एंड मास कम्युनिकेशन द्वारा कनेर बाग में फेशर्स पार्टी का आयोजन किया गया। इसमें फर्स्ट ईयर स्टूडेंट प्रवर खंडेलवाल मिस्टर फ्रेशर और रानू सोनी मिस फ्रेशर बनी। संघ चेयरपर्सन आशीष अग्रवाल ने बताया कि हॉलीवुड की फेमस वेबसीरिज पिंकी ब्लाइंडर्स थीम पर हुए इस समारोह में 'विफ्टी क्रिकेट कप' और वीआईएफटी की मैगजीन 'विविध' का अनावरण किया गया।

फ्रेशर्स के तहत पहले रेम्प वॉक हुई जिसमें प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस बार मिस और मिस फ्रेशर्स चुनने के लिए अनूठी प्रतियोगिताएं रखी गयी जिसमें विद्यार्थियों के ज्यादातर परिधान उन्होंने ही डिजाइन किये और सुन्दर प्रस्तुतियां दी। कुछ विद्यार्थियों ने स्वच्छ भारत और देशभक्ति से जुड़ी प्रस्तुतियां देकर जोश भर दिया। सीनियर्स ने मंच पर आकर अपने अनुभव साझा किये और नये विद्यार्थियों को शुभकामनाएं दी। कॉलेज के विद्यार्थियों द्वारा लिखे गये कंटेंट पर विविध मैगजीन का लोकार्पण अतिथि शिक्षाविद् अजय गुप्ता, के.के. त्रिवेदी, प्रतीक जांगिड़, राजश्री मेहता, निर्णायक अनिता सुखवाल, विलास जानवे, जयश्री मेहता, डायरेक्टर रिमझिम गुप्ता, प्रिंसीपल विप्रा सुखवाल ने किया। विविध पत्रिका की डिजाइन और ले आउट भी विद्यार्थियों द्वारा ही बनाये गये।

कार्यक्रम का संचालन असिस्टेंट प्रोफेसर ओमपाल व हिमांशी चौबीसा ने किया। इस अवसर पर डॉ. नरेंद्र गोयल, देवऋषि मेहता, सावन दोसी, दीपेश मेनारिया, अभिषेक पंवार, दीपक सिंघल आदि उपस्थित थे।

सर्दी में मुलेठी सेवन या फिर सिगड़ी ताप

- डॉ. तुक्तक भानावत -

आयुर्वेद की दृष्टि से अनेक बीमारियों में मुलेठी का बहुव्यापी रामबाण असर देखा गया है। कफ पित्त से जुड़े रोग इसके प्रयोग से शान्त हो जाते हैं। इसका इस्तेमाल नेत्र, ह्रदय, मुख, कण्ठ, उदर रोग तथा स्वांस सम्बन्धी विकार दूर करने में शर्तिया लाभकारी रहता है।

यों तो हर मौसम अपनी-अपनी खासियत रखता है पर सर्दी का मौसम विशेष जतन जाब्ते का यानी सावधानी रखने का है। इस मौसम में कई तरह की बीमारियां हो जाती हैं तो उनसे मुक्ति के लिये भी खानपान, पहनावे आदि का ध्यान रखा जाता है।

यहां मुलेठी के सम्बन्ध में कुछ ज्ञातव्य प्रस्तुत हैं। यह एक प्रकार का वृक्ष होता है। इसकी डालियां, चूरा आदि का कई रूप में उपयोग किया जाता है। आयुर्वेद की दृष्टि से अनेक बीमारियों में मुलेठी का बहुव्यापी रामबाण असर देखा गया है। कफ पित्त से जुड़े रोग इसके प्रयोग से शान्त हो जाते हैं। इसका इस्तेमाल नेत्र, ह्रदय, मुख, कण्ठ, उदर रोग तथा स्वांस सम्बन्धी विकार दूर करने में शर्तिया लाभकारी रहता है।

मुलेठी के चूर्ण से नेत्रों को धोने से बड़ा आराम मिलता है। इसके चूर्ण की बराबर मात्रा में सौंफ का चूर्ण मिलाकर एक-एक चम्मच सुबह-शाम लेने से आंखों की जलन मिटती है तथा नेत्र ज्योति बढ़ती है। नेत्र लालिमा मिटाने के लिये उसके पानी पिसे घोल में रूई का फोहा बांधा जाता है।

कान तथा नाक के रोग के लिये भी मुलेठी बड़ी लाभकारी सिद्ध हुई है। मुलेठी में दाख से पकाए दूध को कान में डालने से फायदा मिलता है। मुलेठी के साथ इलायची तथा मिश्री मिलाकर एक-दो बूंद नाक में डालने से राहत मिलती है। मुलेठी चूसने से हिचकी दूर होती है। सूखी खांसी में कफ पैदा करने हेतु एक चम्मच शहद के साथ दिन में तीन बार सेवन करना चाहिये।

ह्रदय रोग के लिये मुलेठी के 3 से 5 ग्राम चूर्ण को जल के साथ प्रतिदिन नियमित लेना चाहिये। पेट रोग के लिये भी यही करणीय है। त्वचा रोग में भी इसका लेप गुणकारी है। फोड़े-फुंसियों पर भी यह लेप उत्तम परिणाम देता है। घाव भरने के लिये मुलेठी के साथ तिल को पीसकर उसका लेप करना चाहिये। कुल मिलाकर एक ही मुलेठी के विविध उपयोग करने से अनेक शारीरिक कष्टों से निदान पाया जा सकता है।

मुलेठी के अलावा सर्दी में ठण्ड से सिकुड़ते, कांपते, शीत खाते शरीर के लिए ताप अथवा तपन देना भी कई बीमारियों से मुक्ति कारक है। खासतौर से बूढ़े शरीर वालों के लिये यह जरूरी है कि वे येनकेन प्रकारेण सर्दी से अपने शरीर को बचाये रखें। इसी ऋतु में कहते हैं वृद्धों की मृत्यु दर भी बढ़ जाती है। जिनके पास ओढ़ने पहनने की सुविधा नहीं है उनके लिये ताप लेना श्रेष्ठतम है।

सर्दी में चूंकि घना कोहरा छाया रहता है जिससे सूर्यदेव भी उसके आवरण से आच्छादित रहते हैं। गांवों में तो दूसरे-तीसरे ऐसे सर्दी के बचाव के साधन उपलब्ध नहीं होते। पटेलजी के चौरे या किसी सार्वजनिक स्थान पर ऐसे प्रत्येक घर से वृद्ध व्यक्ति निकल समूह में आ मिलता है। लकड़ी, घासफूस, झाड़झंखाड़ बड़ी मात्रा में उपलध होता है। बालबच्चे भी वहीं आ जाते हैं जो जलन सामग्री एकत्र कर लाते हैं और उसे जलाते हैं। इसे तप करना और फिर उस तप से तापने को तप तापना कहते हैं। छोटे-छोटे बच्चे ऐसी जलने की वस्तुएं बड़ी खुशी से एकत्रित कर लाते हैं। इस सम्बन्ध की गीत-पंक्तियां भी सुनने को मिलती हैं- 'सूखी फूखी लाओ भाई / बूढ़ां ने तपावो भाई / बूढ़ां दीधी तूम्बी / मांग-मांग खावो भाई/' लोकगीतों में भी सियाले को विविध रूपों में चर्चित किया गया है।

हमारी छाया ही हमारा प्रभामण्डल

-डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' -

हमारे शरीर की अपनी छाया होती है और अपने आसपास बनी रहती है। प्रकाश होने पर भूतल पर तो छाया होती है ही, किंतु वह परछाई होती है और जो शरीर के चतुर्दिक ध्यानपूर्वक अवलोकित होती है, वह छाया है। इसको 'प्रभामण्डल' कहा जा सकता है। आज की भाषा में ओरा। इसका कदाचित पहला शास्त्रीय प्रयोग और फलकथन गर्गमुनि ने अपनी संहिता में किया है।

गर्गमुनि का समय शुंगकाल माना जा सकता है क्योंकि उनकी संहिता में उस काल की घटनाओं को युगपुराण के रूप में लिखा गया था और उनकी संहिता का बेहतर समीक्षात्मक पुनर्लेखन वराहमिहिर ने 6वीं सदी में किया था।

न केवल बृहत्संहिता बल्कि उससे पहले 'ज्योतिष संहिता' में किया जिसको बृहत्संहिता के बाद समास संहिता का नाम दे दिया गया। आज न समास संहिता बची है न ही गर्ग रचित गर्ग संहिता। अच्छा हुआ जो 9वीं सदी में उत्पल भट ने अपनी टीका में इन ग्रंथों के कुछ श्लोकों को उद्धृत कर लिया।

गर्ग ने कहा कि प्रत्येक प्राणी की अपनी छाया होती है। ये छायाएं किसी भी देहधारी के शरीर में पांच महाभूतों से लेकर सूर्य, विष्णु, इन्द्र, यम और चंद्र का स्वरूप होती है। इसको सामान्य आंखों से देखा नहीं जाता, किंतु बहुत मनोयोग और ध्यान से इनके दर्शन का अभ्यास हो सकता है बिल्कुल वैसे ही जैसे श्रीकृष्ण ने अपने अप्रत्यक्ष स्वरूप को देखने के लिए अर्जुन को दिव्यदृष्टि संपन्न होने का सुझाव दिया था।

वराह मिहिर ने 587 ईस्वी के आसपास जब प्राणियों के लक्षणों का वर्णन आरंभ किया तो इस महत्त्वपूर्ण विषय पर गंभीरता से विचार किया। उस समय यह भारतीय समाज में व्यवहार्य था और जातक की छाया के आधार पर उसके विचारित कार्यों के परिणाम को कहा जाता था। यही नहीं, छाया के आधार पर व्यक्तित्व को जानकर उसके संकल्पों, उसके साध्यों और गुण-धर्मों को कहा जाता था।

वराहमिहिर ने इसको सोदाहरण समझाया है। उसने परीक्षण से पाया कि जिस प्रकार स्फटिक आदि द्रव्यों के बने कलशों में दीपक को जलाया जाए तो बाहर की ओर जैसी आभा दिखाई देती है, वैसे ही किसी व्यक्ति की छाया को बाहर भांपा जा सकता है -

छाया शुभाशुभ फलानि निवेदयन्ती लक्ष्या मनुष्य पशु पक्षिसु लक्षणज्ञैः।

तेजोगुणान् बहिरपि प्रविकाशयन्ती दीपप्रभा स्फटिक रत्न घट स्थितेव।। (68, 89)

Comple & ion in man, animal and birds is detected by persons learnd in the matter and indicate both good and evil and is like a lamp within a crystal vessel throwing its light on the objects around.

इस विवरण से वराह मिहिर ने निष्कर्ष निकाला था कि इन छायाओं को दस तरह का कई लोग बता रहे हैं- केचिद् वदन्ति दश ताश्च यथानुपूर्वया। किंतु, पांच में दसों ही आ जाती हैं क्योंकि सूर्य, विष्णु, इंद्र, यम व चंद्र की छायाओं के लक्षण और फल भूमि की छाया के समान ही होते हैं। जाहिर है कि वराह ने भी दस भेदों को तो कहा मगर जब फल समान देखा तो ग्रंथ के विस्तार भय से पांच में ही समेटने का प्रयास किया - तुल्यास्तु लक्षणफलैरिति तत्समासाः।

अब इनके लक्षण और परिणाम भी देखियेगा -

(1) पार्थिव छाया - दांत, विनम्रता, अपारदर्शी जैसी, त्वचा, नख, रोम, केश, स्निग्धता व सुगंध हो तो भूमि की छाया जानकर पुष्टि, धनप्राप्ति, उन्नति व व्यापारादि धर्म में प्रवृत्ति निश्चित होगी।

(2) वारि छाया - स्निग्ध व सफेद, स्वच्छ, नीली व नेत्रों को रुचिकर लगने वाली, जल की छाया सौभाग्य, करुणा, सुख व उन्नति की सूचक है और यह छाया मां की तरह व्यक्ति का पालन करती है।

(3) अनल छाया - क्रोधशीलता, तिरस्कार से रहित, कमल, आग व सुवर्ण के समान आभा, तेज, पराक्रम व प्रताप वाली आग की छाया वाला व्यक्ति जयी होता है और इच्छित कार्यों में सफलता खुद ही बुनता है।

(4) पवन छाया - वायु की छाया हो तो मलीनता, रूखापन, काला रंग और दुर्गंधित सी लगती है। यह वध, बंधन, रोग, लाभ में बाधा और धन वंचना जैसे परिणाम देती है।

(5) अंबर छाया - आकाश की छाया स्फटिक के समान सफेद होती है और व्यक्तित्व को सहज रखती है। यह व्यक्ति के लिए भाग्यदायी, उदारता देती है और शुभ कार्यों के लिए एक संचित निधि की तरह मानी जाती है।

है न रोचकर बात... ।

यह विधि आजकल के 'ओरा दर्शन' से बिल्कुल भिन्न नहीं है। मगर, क्या आप इस बात को जानते हैं? इस विधि के अवदान के लिए हमें कहीं अन्यत्र देखने की जरूरत नहीं है। ओरा या प्रभामण्डल से हमारा देश बहुत पहले परिचित था, मगर हम इस दिशा में भी सोचें और ज्यादा लगे तो बृहत्संहिता को उठालें।

डॉ. गजेसिंह को सर्वोच्च कृति-सम्मान

जोधपुर के जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय में राजस्थानी विभागाध्यक्ष डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित को उनकी काव्य-कृति 'पळकती प्रीत' पर सर्वोच्च पुरस्कार प्रदान किया जायेगा। केन्द्रीय साहित्य अकादमी के इस पुरस्कार में शॉल, सम्मानपत्र के साथ एक लाख रूपये की राशि दी जाती है।

उल्लेखनीय है कि डॉ. गजेसिंह ने पहलीबार इस प्रबंध काव्य में मध्यकालीन लोकप्रचलित प्रेमाख्यान ढोला-मारू, मूमल-महेन्दर, जेठा-उजली, बाघो-भारमली, नरबद-सुपियारदे, सैणी-बीजानंद, आभल-खींवजी, नागजी-नागवंती, जलाल-बबूना, सौरठ-बांझौ तथा मेहर-कंवळ की कथा को नवबोध, मानवीय संवेदना तथा आधुनिक दृष्टि से रचना की है। 'शब्द रंजन' की बधाई।

तपोबल ही सर्वोपरि बल

-पं. श्रीराम शर्मा आचार्य-

धन, बुद्धि, बल आदि के आधार पर अनेक व्यक्ति, उन्नतिशील, सुखी एवं सम्मानित बनते हैं पर उन सबसे अनेक गुना महत्त्व वे लोग प्राप्त करते हैं जिन्होंने आध्यात्मिक बल का संग्रह किया है। तपस्वी लोग तपबल से अपनी थोड़ी-सी शक्ति शिष्यों को देकर महान पुरुष बना देते थे। विश्वामित्र के आश्रम में रहकर रामचन्द्र, सन्दीपन ऋषि के गुरुकुल में पढ़कर कृष्ण का निर्माण हुआ। रामदास के चरणों में बैठकर छत्रपति शिवाजी बना। रामकृष्ण परमहंस से शक्ति कण पाकर विवेकानन्द कहलाया। नारद का उपदेश पाकर डाकू वाल्मीकि महर्षि बन गया।

भगीरथ कठोर तप करने के लिए वन को गए और अपनी साधना से प्रभावित कर गंगाजी को भूलोक में लाने एवं शिवजी को अपनी जटाओं में धारण करने के लिए तैयार किया। भगवान बुद्ध और भगवान महावीर ने अपने काल में लोक की दुर्गति को मिटाने के लिए तपस्या को ही ब्रह्मास्त्र के रूप में प्रयोग किया। परशुरामजी का फरसा अभूतपूर्व अस्त्र सिद्ध हुआ। उसी से उन्होंने राजाओं को परास्त कर 21 बार पृथ्वी को मुक्त किया। तपस्वी दधीचि की हड्डियों का व्रज प्राप्त कर इन्द्र ने देवताओं को पार लगाया। बजरंगबली हनुमान, बाल ब्रह्मचारी भीष्म पितामह के पराक्रमों से सभी परिचित हैं। शंकराचार्य, दयानन्द प्रभृति अनेकों महापुरुष अपने ब्रह्मचर्य व्रत के आधार पर ही संसार की महान सेवा कर सके।

तप की शक्ति अपार है। सोना तपता है तो खरा, तेजस्वी और मूल्यवान बनता है। जितनी भी धातुएं हैं, वे सभी खान से निकलते समय दूषित, मिश्रित व दुर्बल होती हैं पर जब उन्हें कई बार भट्टियों में तपाया, पिघलाया और गलाया जाता है तो वे शुद्ध एवं मूल्यवान बन जाती हैं। मामूली सा अभ्रक सौ बार अग्नि में तपाया जाता है तो चन्द्रोदय रस बनता है। साधारण अन्न अग्नि संस्कार से पकाये जाने पर सुरूचिपूर्ण व्यंजनों का रूप धारण करते हैं।

प्रकृति तपती है, जीव तपता है तभी अन्तराल में छिपे हुए पुरुषार्थ, पराक्रम, साहस, उल्लास, ज्ञान, विज्ञान, प्रकृति रत्नों की श्रृंखला प्रस्फुटित होती है। धन, बुद्धि, बल आदि के आधार पर अनेक व्यक्ति, उन्नतिशील, सुखी एवं सम्मानित बनते हैं पर उन सबसे अनेक गुना महत्त्व वे लोग प्राप्त करते हैं जिन्होंने आध्यात्मिक बल का संग्रह किया है।

प्राचीनकाल में लोग अपने बच्चों को कष्ट-सहिष्णु अध्यवसायी, तितीक्षाशील एवं तपसी बनाने के लिए छोटी आयु में ही गुरुकुलों में भर्ती करते थे ताकि आगे चलकर वे कठोर जीवनयापन करने के अभ्यस्त होकर महापुरुषों की महानता के अधिकारी बन सकें। आलसी और विलासी, स्वार्थी और लोभी लोगों को घृणित एवं निकृष्ट माना जाता रहा है।

प्रजापति ब्रह्मा ने विष्णु की नाभि से उत्पन्न कमल पुष्प पर सौ वर्षों तक गायत्री उपासना तप किया तभी उन्हें सृष्टि निर्माण एवं ज्ञान-विज्ञान के उत्पादन की शक्ति उपलब्ध हुई। भगवान शंकर स्वयं तप रूप हैं।

शेषजी तप के बल पर ही पृथ्वी को अपने शीश पर धारण किये हैं। सप्त ऋषियों ने इसी मार्ग पर दीर्घकाल तक चलते रहकर वह सिद्धि प्राप्त की जिससे सदा उनका नाम अजर-अमर रहेगा। देवताओं के गुरु बृहस्पति और असुरों के गुरु शुक्राचार्य अपने-अपने शिष्यों के कल्याण, मार्गदर्शन और सफलता की साधना तप शक्ति के आधार पर ही करते रहे हैं।

भगीरथ कठोर तप करने के लिए वन को गए और अपनी साधना से प्रभावित कर गंगाजी को भूलोक में लाने एवं शिवजी को अपनी जटाओं में धारण करने के लिए तैयार किया। यह कार्य साधारण प्रक्रिया से सम्पन्न न होता, तप ने ही उन्हें सम्भव बनाया।

भगवान बुद्ध और भगवान महावीर ने अपने काल में लोक की दुर्गति को मिटाने के लिए तपस्या का ही ब्रह्मास्त्र के रूप में प्रयोग किया। तपोबल से परशुरामजी का फरसा अभूतपूर्व अस्त्र सिद्ध हुआ। उसी से उन्होंने राजाओं को परास्त कर 21 बार पृथ्वी को मुक्त किया। तपस्वी दधीचि की हड्डियों का वज्र प्राप्त कर इन्द्र ने देवताओं को पार लगाया।

ब्रह्मचर्य को तप का प्रधान अंग माना गया है। बजरंगबली हनुमान, बाल ब्रह्मचारी भीष्म पितामह के पराक्रमों से सभी परिचित हैं। शंकराचार्य, दयानन्द प्रभृति अनेकों महापुरुष अपने ब्रह्मचर्य व्रत के आधार पर ही संसार की महान सेवा कर सके। प्राचीनकाल में ऐसे अनेकों गृहस्थ होते थे जो विवाह होने पर भी अपनी पत्नी के साथ ब्रह्मचर्य का पालन करते थे।

तपस्वी लोग तपबल से अपनी थोड़ी-सी शक्ति शिष्यों को देकर महान पुरुष बना देते थे। विश्वामित्र के आश्रम में रहकर रामचन्द्र, सन्दीपन ऋषि के गुरुकुल में पढ़कर कृष्ण का निर्माण हुआ। रामदास के चरणों में बैठकर छत्रपति शिवाजी बना। रामकृष्ण परमहंस से शक्ति कण पाकर विवेकानन्द कहलाया। नारद का उपदेश पाकर डाकू वाल्मीकि महर्षि बन गया।

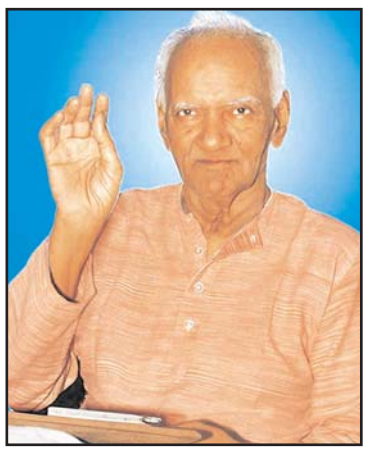

उत्तम सन्तान प्राप्त करने के अभिलाषी भी तपस्वियों के अनुग्रह से सौभाग्यान्वित हुए हैं। श्रृंगी ऋषि द्वारा दशरथ को चार पुत्र प्राप्त हुए। राजा दिलीप को वशिष्ठ से पुत्र प्राप्त हुआ। पाण्डु के व्यासजी के अनुग्रह से पांच पाण्डव उत्पन्न हुए। मोतीलाल नेहरू को हिमालय निवासी तपस्वी ने मनोरथ पूर्ण कर जवाहरलाल जैसा पुत्ररत्न दिया।

श्रवणकुमार को तीर मारने के दण्ड स्वरूप राजा दशरथ को मिले श्राप से पुत्र शोक में मरना पड़ा। गौतम ऋषि के श्राप से इन्द्र और चन्द्रमा की दुर्गति हुई। राजा सगर के दस हजार पुत्रों को कपिल मुनि के क्रोध से भस्म होना पड़ा। पार्वती के प्रचण्ड तप ने शंकर को विवाह करने के लिए विवश किया।

अनुसूया ने अपनी आत्मशक्ति से ब्रह्मा, विष्णु और महेश को नन्हें-नन्हें बालकों के रूप में परिणत किया। सुकन्या ने अपने वृद्ध पति को युवा बनाया। सावित्री ने यम से संघर्ष कर अपने मृतक पति के प्राण लौटाये। कुन्ती ने सूर्य तप कर तेजस्वी कर्ण को जन्म दिया। दमयन्ती के श्राप से व्याध को जीवित ही जल जाना पड़ा।

रावण ने अनेकों बार सिर का सौदा करने वाली तप साधना से अजेय शक्तियों का भण्डार प्राप्त किया। कुम्भकरण ने तप द्वारा छह--छह महीने सोने-जागने का वरदान पाया। मेघनाद, अहिरावण और मारीचि को मायावी शक्तियां तप द्वारा मिलीं। भस्मासुर ने सिर पर हाथ रखने से किसी को भी जला देने की शक्ति तप करके ही प्राप्त की।

इस युग में महात्मा गांधी, सन्त विनोबा,, ऋषि दयानन्द, मीरांबाई, कबीर, दादू, तुलसीदास, सूरदास, रैदास, अरविन्द, महर्षि रमण, रामकृष्ण परमहंस, रामतीर्थ आदि आत्मबल सम्पन्न व्यक्तियों द्वारा जो कार्य किये गये हैं, वे साधारण भौतिक पुरुषार्थी द्वारा पूरे किये जाने सम्भव न थे। हमने भी अपने जीवन के आरम्भ से ही यह तपश्चर्या का कार्य अपनाया। 24 महापुरुष के चरणों के कठिन तप द्वारा उपलब्ध शक्ति का उपयोग हमने लोककल्याण में किया। फलस्वरूप अगणित व्यक्ति हमारी सहायता से भौतिक उन्नति एवं आध्यात्मिक प्रगति की उच्च कक्षा तक पहुंचे हैं। अनेकों को भारी व्यथा व्याधियों से, चिन्ता-परेशानियों से छुटकारा मिला है। साथ ही धर्म, जागृति एवं नैतिक पुनरुत्थान की दिशा में आशाजनक कार्य हुआ है।

ऐसे अस्त्र कोई नहीं बना पा रहा है जो लगाई आग को बुझा सके, आग लगाने वालों के हाथ को कुंठित कर सके और जिनके दिलों व दिमागों में नृशंसता की भट्टी जलती है, उनमें शान्ति एवं सौभाग्य की सरसता प्रवाहित कर सके। ऐसे शान्ति शस्त्रों का निर्माण राजधानियों में, वैज्ञानिक प्रयोगशाओं में नहीं हो सकता है।

बचपन में मनुष्य की बुद्धि कितनी अविकसित होती है कि वह बर्फ जैसी मामूली चीज को चांदी जैसी मूल्यवान समझता है। असन्तोष एक प्रवृत्ति है, जो साधनों से नहीं तृष्णा से सम्बन्धित है। साधनों से तृष्णा तृप्त नहीं होती वरन् सुरसा के मुंह की तरह और अधिक बढ़ती है।

मनुष्य का जीवन विभिन्न क्षेत्रों में बंटा रहता है, वह सुखी रहता है। उसमें कुछ विशेषता पैदा नहीं हो पाती, पर जब विशिष्ट लक्ष्य को लेकर कोई व्यक्ति उस सीमित क्षेत्र में ही अपनी सारी शक्तियों को केन्द्रित कर देता है तो उसके द्वारा आश्चर्यजनक उत्साहवर्धक परिणाम उत्पन्न होते देखे जाते हैं।

कठिनाइयां जीवन में न हों, तो व्यक्ति की विशेषताएं बिना प्रकट हुए ही रह जायें। टकराने से शक्ति उत्पन्न होने का सिद्धान्त एक सुनिश्चित तथ्य है। आराम का शौक-मौज का जीवन, विलासी जीवन निर्जीवों से कुछ ही ऊंचा माना जा सकता है। गंगा डरती नहीं, न शिकायत करती है। यह तंगी में होकर गुजरती है, मार्ग रोकने वाले रोड़ों से घबराती नहीं, वरन् उनसे टकराती हुई अपना रास्ता स्वयं बनाती है। काश! हमारी अन्त:चेतना भी ऐसे प्रबल वेग से परिपूर्ण हुई होती तो व्यक्तित्व के निखरने का कितना अमूल्य अवसर हाथ लगता।

चीड़ और देवदारू के पेड़ों ने यही नीति अपनाई है। दूसरी ओर टेढ़े-तिरछे पेड़ हैं जिनका मन स्थिर, चित्त चंचल रहा, यह देखना चाहा कि देखें किस दिशा में ज्यादा मजा है, किधर जल्दी सफलता मिलती है, इस चंचलता में उन्होंने अनेक दिशाओं में अपने को बांटा, अनेकानेक शाखाएं फोड़ीं।

छोटी-छोटी टहनियों से उनका कलेवर फूल गया, वे प्रसन्न भी हुए कि हमारी शाखाएं हैं, इतना फैलाव-फुलाव है। किसी वस्तु या बात की उपयोगिता जाने और अनुभव किये बिना मनुष्य न तो उसकी ओर आकर्षित होता है और न उसका उपयोग करता है। इसलिए किसी वस्तु का महत्त्वपूर्ण होने से भी बढ़कर है उसकी उपयोगिता को जानना और उससे प्रभावित होना।

धन-दौलत, रूप-यौवन, राग-रंग, विषय-वासना, मौज-मजा जैसी अगणित चीजें हैं जिन्हें देखते ही मन मचलता है, किन्तु दुनियां में चमकीली दीखने वाली चीजों में से अधिकांश ऐसी होती हैं जिन्हें पाकर पछतावा और अन्त में उन्हें आज के जंगली सेवों की तरह फैंकना पड़ता है।

साधक का पहला लक्ष्य है- धैर्य। धैर्य की रक्षा ही भक्ति की परीक्षा है। जो अधीर हो गया सो असफल हुआ। लोभ और भय के, निराशा और आवेश के जो अवसर साधक के सामने आते हैं उनमें और कुछ नहीं केवल धैर्य परखा जाता है। तू कैसा साधक है, जो अभी इस पहले पाठ को भी नहीं पढ़ा।

संसार में अगणित व्यक्ति पुण्यात्मा और सुखी हैं। सन्मार्ग पर चलते और मानव जीवन को धन्य बनाते हुए अपना व पराया कल्याण करते हैं। यह देख-सोचकर जी को बड़ी सान्त्वना होती है और लगता है सचमुच यह दुनियां ईश्वर ने पवित्र उद्देश्यों की पूर्ति के लिए बनाई।

इस कुरुप दुनियां में जो कुछ सौन्दर्य है वह इन पुण्यात्माओं का ही अनुदान है। असीम स्थिरता से निरन्तर प्रेत-पिशाचों जैसी हाहाकारी नृत्य करने वाले अणु-परमाणुओं से बनी-भरी इस दुनियां में जो स्थिरता और शक्ति है वह इन पुण्यात्माओं के द्वारा ही उत्पन्न की गई है। सर्वत्र भरे बिखरे जड़ पंचतत्वों में सरसता और शोभा दिखती है, उसके पीछे इन सत्पथगामियों का प्रयत्न और पुरुषार्थ ही झांक रहा है। जब मनोभूमि विकृत हो गयी, सब उल्टा सोचा और अनुचित किया जाने लगा तो विष वृक्ष बोकर अमृत फल पाने की आशा कैसे सफल होगी?

सर्वत्र फैला दु:ख-दारिद्रय, शोक-सन्ताप किस प्रकार समस्त मानव प्राणियों को कितना कष्टकर हो रहा है, पतन और पाप के गर्त में लोग किस शान और तेजी से गिरते-मरते चले जा रहे हैं, यह दयनीय दृश्य देखे, सुने तो अन्तरात्मा रोने लगी। मनुष्य अपने ईश्वरीय अंश-अस्तित्व को क्यों भूल गया? उसने अपना स्वरूप और स्तर इतना क्यों गिरा दिया? यह प्रश्न निरन्तर मन में उठे पर उत्तर कुछ न दिया।

बुद्धिमानी, चतुरता, समय कुछ भी तो यहां कम नहीं है। लोग एक-से-एक बढ़कर कला-कौशल उपस्थित करते हैं और एक-से-एक बढ़कर चातुर्य चमत्कार का परिचय देते पर इतना क्यों नहीं समझ पाते कि दुष्टता का पल्ला पकड़कर वे जो पाने की आशा करते हैं, वह मृगतृष्णा ही बनकर रह जायेगा।

केवल पतन और सन्ताप ही हाथ लगेगा। मानवीय बुद्धिमता में यदि एक कड़ी और जुड़ गई होती, समझदारी ने इतना निर्देश किया होता कि ईमान को साबित और सौजन्य को विकसित किये रहना मानवीय गौरव के अनुरूप और प्रगति के लिए आवश्यक है तो संसार की स्थित कुछ दूसरी ही होती।

सभी सुख-शान्ति का जीवन जी रहे होते। किसी को किसी पर अविश्वास, सन्देह न करना पड़ता और किसी द्वारा ठगा, सताया न जाता। तब यहां दु:ख दारिद्रय का अता-पता भी न मिलता। सर्वत्र सुख-शान्ति की सुरभि फैली अनुभव होती।

जूता गांठने वाली

- रेवतीरमण शर्मा -

पता नहीं है उसे
समुद्र किनारे
जहां वह बैठी है
उस रम्यता और समुद्र की
उठती उत्ताल तरंगों को देखने
आते हैं कितने लोग?

पता नहीं उसे
कुछ लोग बंसी को
समुद्र में क्यों फैंक रहे हैं
और मछली उनकी पकड़ में
क्यों नहीं आ रही है?

वह नहीं जानती
कितना बोती है दुनिया फरेब और
कितना कात लेती है झूठ का कपास
काजू की कितनी शराब
उतर जाती है लोगों के गले के नीचे।

वह जानती है
जो अभी सिलाकर ले गया है जूते
वह वापस क्यों लौट आया है
सिर्फ फटे जूतों का सीना
किसी के हरे हुए जख्म तो
वह सीं नहीं सकती
वह देखती है बार-बार
अपने पैरों के तले का टाट
जिसके नीचे अभी तक
बच्चों के लिए
आया नहीं है
चांवल और मांछ।

बाजार / समाचार

डॉ. धींग व डॉ. कर्णावट को भिक्षु प्रज्ञा सम्मान

उदयपुर (ह. सं.)। 'अणुव्रत' के पूर्व संपादक डॉ. महेंद्र कर्णावट एवं साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग को 27 दिसम्बर को अशोकनगर स्थित विज्ञान समिति में आचार्य भिक्षु प्रज्ञा सम्मान (2023) से सम्मानित किया गया। यह सम्मान आचार्य भिक्षु आलोक संस्थान, केलवा द्वारा शेषमल कज्जूदेवी कोठारी परिवार के सौजन्य से दर्शन, साहित्य व अध्यात्म में विशिष्ट योगदान के लिए प्रतिवर्ष दो विद्वानों को शॉल, श्रीफल, प्रशस्ति और मानधन के साथ प्रदान किया जाता है।

मुनि संबोधकुमार 'मेधांश' ने डॉ. कर्णावट के समर्पण और डॉ. धींग की लेखकीय प्रतिबद्धता को प्रेरणादायक बताया। संस्थापक डॉ. कुंदनलाल कोठारी ने पुरस्कार का महत्व बताया। अध्यक्षता कर्नल डॉ. डी. एस. बया ने की। संस्थान अध्यक्ष दिनेश कोठारी ने कहा कि डॉ. कर्णावट और डॉ. धींग जैसे मनीषियों के सम्मान से पुरस्कार का गौरव बढ़ा है। डॉ. एल.एल. धाकड़ ने डॉ. कर्णावट और डॉ. पारसमल अग्रवाल ने डॉ. धींग का परिचय दिया। सम्मान ग्रहण करने पर डॉ. धींग ने कहा कि हम अंधेरे से नहीं डरें, बल्कि अंधेरे में उजाले की साधना करें। जैसी आचार्य भिक्षु ने 'अंधेरी ओरी' में की थी। प्रणत धींग ने काव्यपाठ किया। अव्वल छात्र जयकुमार बोहरा का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में अणुव्रत के संपादक संचय जैन, राजस्थानी भाषा, साहित्य व संस्कृति अकादमी के पूर्व अध्यक्ष डॉ. देव कोठारी, विज्ञान समिति के कार्याध्यक्ष डॉ. बी.एल. चावत सहित अनेक शिक्षाविद, वैज्ञानिक, समाजसेवी और साहित्यकार उपस्थित थे। 'बच्चों का देश' के सहसंपादक प्रकाश तांतेड़ ने कार्यक्रम का संचालन किया।

महेशचंद्र शर्मा का 'गर्व अभिनंदन'

अजमेर (ह. सं.)। सूचना एवं जनसंपर्क विभाग राजस्थान से सेवानिवृत संयुक्त निदेशक महेशचंद्र शर्मा का मीडिया फोरम संस्थान द्वारा कान्हाश्री सभागार में 'गर्व अभिनंदन' किया गया। श्री शर्मा ने सभी का आभार जताते हुए भरोसा दिलाया कि वे सदैव सहयोग के लिए तत्पर रहेंगे।

फोरम के अध्यक्ष गिरधर तेजवानी ने पत्रकारों से अपने अधिकार हासिल करने का आह्वान किया। उन्होंने श्री शर्मा को संस्था का मानक सदस्य बनाने की घोषणा की। समारोह में डॉ. रशिका महर्षि, गजेंद्र बोहरा, अनुराग जैन, विजय पाराशर, विजय मौर्य, पीके शर्मा, जगदीश मूलचंदानी, अरुण बाहेती, उमाकांत जोशी, समुंदरसिंह राठौड़, नरेश बागनी, दिलीपसिंह, रतनलाल बाकोलिया, विनोदकुमार वर्मा, दौलतराज कोठारी, रामचंद्र बिजरानी, विक्रम बेदी, रतनलाल बाकोलिया, राजकुमार लुधानी, सुभाष चंदन उपस्थित रहे।

इंदिरा आईवीएफ और सेफट्री में गठबंधन

उदयपुर (ह. सं.)। इंदिरा आईवीएफ और इंश्योरटेक, सेफट्री ने इनफर्टिलिटी की समस्या वाले कपल्स की सहायता के लिए भारत का पहला बीमा शुरू करने के लिए सहयोग की घोषणा की है। देश में अपनी तरह के इस अनूठे स्वास्थ्य बीमा का उद्देश्य कपल्स को उनके संपूर्ण उपचार के खर्च में भारी बचत करने में मदद करके देश में स्वास्थ्य सेवा वितरण को बेहतर बनाना है।

इंदिरा आईवीएफ के मुख्य कार्यकारी अधिकारी और सह-संस्थापक डॉ. क्षितिज मुर्डिया ने कहा कि इनफर्टिलिटी के उपचार में अग्रणी होने के नाते, हम इनफर्टिलिटी के संबंध में भारतीयों में मौजूद जागरूकता की कमी को दूर करने और संतान सुख पाने के इच्छुक कपल्स का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हमने विभिन्न सामाजिक-आर्थिक व्यवस्थाओं में इनफर्टिलिटी से संबंधित भ्रामक जानकारियों को दूर करने के लिए सक्रिय रूप से काम किया है। सेफट्री इंश्योरेंस के मुख्य कार्यकारी अधिकारी विकास आनंद ने कहा कि हमने विशेष रूप से टियर-2 आबादी के बीच बीमा कवरेज की आवश्यकता को देखा, जहां स्वास्थ्य सेवा वितरण पर खर्च करने की क्षमता बेहद सीमित है। यह पेशकश कपल्स को उपलब्ध कराया जाने वाला अनोखा और अपनी तरह का पहला प्रस्ताव है।

आशीर्वाद का नया कैंपेन 'लिख के ले लो' लॉन्च

उदयपुर (ह. सं.)। आशीर्वाद आटा ने अपना एक नया कैम्पेन 'लिख के ले लो' लॉन्च किया है। इसका मकसद ग्राहकों को आटे के जरूरी गुणवत्ता मानकों की जानकारी से लैस करना है। इस कैम्पेन को मजबूती देने आशीर्वाद ने जानी-मानी टीवी अभिनेत्री रूपाली गांगुली को लेकर एक टीवी विज्ञापन कैम्पेन तैयार किया है। जहां वे आशीर्वाद आटा के 'क्वॉलिटी सर्टिफिकेट' फीचर का आकलन करती नजर आएंगी।

अनुज कुमार रुस्तगी, सीओओ, स्टेपल्स एवं एडजैसेंसीज, आईटीसी फूड्स ने कहा कि 'लिख के ले लो' कैम्पेन, आशीर्वाद की गुणवत्ता तथा शुद्धता की परंपरा में बहुत बड़ा कदम है। यह कैम्पेन सर्वोच्च मानक का गेहूं का आटा देने की हमारी अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाता है। रूपाली गांगुली ने कहा कि भारत के लाखों घरों की तरह, आशीर्वाद भी वर्षों से हमारे घर का हिस्सा रहा है। मैं ब्राण्ड के बेहतर क्वॉलिटी के प्रोडक्ट्स देने और ग्राहकों को बेहतर खाने के लिए प्रोत्साहित के संकल्प करने की सराहना करती हूं।

सुचि सेमीकॉन द्वारा 870 करोड़ रुपये का सेमीकंडक्टर प्लांट स्थापित

सूरत (ह. सं.)। सुचि सेमीकॉन के संस्थापक और सूरत कपड़ा उद्योग के दिग्गज अशोक मेहता ने वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट 2024 में मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल और अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में गुजरात सरकार के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। 'डायमंड सिटी' सूरत में भारत की पहली स्वदेशी सेमीकंडक्टर असेंबली और टेस्ट सुविधा स्थापित करने के लिए 870 करोड़ रुपये के निवेश की घोषणा की।

मेहता ने अटूट महत्वाकांक्षा के साथ घोषणा की कि हम भारत में पहले स्वदेशी सेमीकंडक्टर निर्माता हैं। हमारी दृष्टि सेमीकंडक्टर असेंबली में एक वैश्विक नेता बनने की है, जो उच्च गुणवत्ता वाले समाधान प्रदान करती है जो नवाचार को बढ़ावा देती है। प्रौद्योगिकी प्रगति को सशक्त बनाती है, और हमारे ग्राहकों को दुनिया को बेहतर बनाने वाले अत्याधुनिक उत्पाद बनाने में सक्षम बनाती है। सूरत सेमीकंडक्टर मिशन के साथ जुड़कर ऐसा करने वाला भारत का पहला राज्य बन गया।

उद्यम की वैश्विक अपील पर प्रकाश डालते हुए, मेहता ने खुलासा किया कि हमारी विशेषज्ञता ने पहले ही संयुक्त राज्य अमेरिका और सिंगापुर जैसे अंतरराष्ट्रीय बाजारों में विभिन्न पैकेजों और उपकरणों में प्रति दिन लगभग 1 लाख इकाइयों की प्रतिबद्धता के साथ रुचि पैदा कर ली है। मेहता ने परियोजना के सामाजिक-आर्थिक प्रभाव पर जोर देते हुए कहा कि सेमीकंडक्टर संयंत्र से 1,200 रोजगार के अवसर पैदा होने का अनुमान है, जो सूरत के औद्योगिक परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। परिचालन 2024 में शुरू होने की उम्मीद है, जो तकनीकी नवाचार और वैश्विक प्रमुखता की दिशा में सूरत की यात्रा में एक नया अध्याय है।

'3-डी कंक्रीट प्रिंटिंग' तकनीक का अनावरण

उदयपुर (ह. सं.)। एजेक्स इंजीनियरिंग ने '3-डी कंक्रीट प्रिंटिंग' तकनीक में प्रवेश किया है और '3-डी कंक्रीट प्रिंटिंग मशीन' पेश की है। कंपनी ने 3 दिन में 350 वर्गमीटर का घर बनाकर इस तकनीक का प्रदर्शन किया। इस प्रकार का घर बनाने में आमतौर पर कुछ महीने लगते हैं। उसकी तुलना में यह निर्माण 'एजेक्स 3-डी कंक्रीट प्रिंटिंग' तकनीक के माध्यम से तेजी से और बड़े पैमाने पर किया जा सकता है। यह किफायती और पर्यावरण की दृष्टि से टिकाऊ भी है।

एजेक्स इंजीनियरिंग के प्रबंध निदेशक और सीईओ शुभब्रत साहा ने कहा कि एजेक्स3 दशकों से अधिक समय से भारत में 'विश्व स्तरीय निर्माण' कर रहा है। हम 360 डिग्री कंक्रीट समाधानों की अपनी अनूठी श्रृंखला के माध्यम से भारतीय नवाचार और इंजीनियरिंग की अवधारणा को बढ़ावा देते हैं। 3-डी प्रिंटिंग तकनीक में अग्रणी बनकर, हम नवाचार औरस्थिरता के माध्यम से भारत में विश्व स्तरीय तकनीक और उपकरण बनाने के लिए अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त कर रहे हैं। हम उन संभावनाओं को लेकर बहुत उत्साहित हैं जो 3-डी कंक्रीट प्रिंटर निर्माण में बना सकते हैं।

'एजेक्स 3-डी कंस्ट्रक्शन प्रिंटर' का उपयोग केवल घर बनाने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसमें बड़े बंगले, डाकघर, फायर स्टेशन, पवनचक्की चौथराबनाने की भी क्षमता है। यहां तक कि मूर्तियों का निर्माण भी किया जा सकता है। इस तकनीक की बदौलत निर्माण में विभिन्न विकल्पों को साकार किया जा सकता है। 'एजेक्स 3-डीसीप्रिंटर' सीएडी मॉडल से भौतिक ऑब्जेक्ट बनाने के लिए सीएडी डिज़ाइन का सहजता से अनुवाद करता है। गेम-चेंजर कहलाने वाले एजेक्स3-डीसीप्रिंटिंग तकनीक से डिज़ाइन में लचीलापन लाया जा सकता है। एजेक्स3-डी कंक्रीट प्रिंटर - एपीएक्स 1.0 प्रिंटर के साथ 10 मीटर लंबाई, 10 मीटर चौड़ाई और 9 मीटर ऊंचाई की बड़ी इमारत बनाई जा सकती है। कंपनी भविष्य में और भी अधिक क्षमताओं वाले मॉडल लॉन्च करने का इरादा रखती है। प्रिंटर का उपयोग साइट पर बड़े आकार के प्रीकास्ट भागों के साथ भी किया जा सकता है।

साइबर धोखाधड़ी पर जागरूकता कार्यशालाएं आयोजित

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक ने डिजिटल बैंकिंग जागरूकता अभियान के एक भाग के रूप में, राजस्थान, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, पंजाब, हरियाणा, हिमाचलप्रदेश, जम्मू और कश्मीर में सुरक्षित बैंकिंग कार्यशालाओं की एक श्रृंखला आयोजित की। नवंबर और दिसंबर में 300 से अधिक ऐसी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिसमें 8,000 से अधिक नागरिकों को सुरक्षित डिजिटल बैंकिंग प्रथाओं के बारे में जागरूक किया गया।

एचडीएफसी बैंक के कार्यकारी उपाध्यक्ष मनीष अग्रवाल ने कहा कि त्योहारी मौसम में साइबर अपराधी भी सक्रिय हैं। आमतौर पर इस अवधि के दौरान ई-कॉमर्स साइटों पर विभिन्न आकर्षक सौदों के कारण ऑनलाइन शॉपिंग में वृद्धि होती है, जिससे साइबर धोखेबाजों के शिकार होने का खतरा भी बढ़ जाता है। नागरिकों के बीच जागरूकता पैदा करना आवश्यक है ताकि वे गोपनीय बैंकिंग डेटा साझा न करें या असत्यापित लिंक पर क्लिक न करें। इन कार्यशालाओं का उद्देश्य स्कूल, कॉलेजों, ग्राहकों, कानून प्रवर्तन एजेंसियों, वरिष्ठ नागरिकों, स्वयं सहायता समूहों, ग्राहकों और कर्मचारियों को शिक्षित करना था। इन इंटरैक्टिव सत्रों के माध्यम से, प्रतिभागियों को सुरक्षित डिजिटल बैंकिंग प्रथाओं पर बहुमूल्य जानकारी प्राप्त हुई ताकि वे साइबर धोखाधड़ी का शिकार न हों।

सबसे बड़े मेगा-गेटवे का सफलतापूर्वक संचालन

उदयपुर (ह. सं.)। भारत के सबसे बड़े पूरी तरह से एकीकृत लॉजिस्टिक्स प्रदाता, डेल्हीवरी लि. ने भिवंडी में अपने सबसे बड़े मेगा-गेटवे को सफलतापूर्वक संचालित किया। 1200000 वर्गफुट क्षेत्र में बने, भिवंडी ट्रकिंग टर्मिनल भारत की सबसे बड़ी लॉजिस्टिक्स सुविधाओं में से एक है और डेल्हीवरी के पार्सल और पार्ट-ट्रकलोड माल को एक साथ संभालने की क्षमता के साथ स्वचालित हब, सॉर्टेशन, रिटर्न और माल ढुलाई संचालन को संयोजित करता है।

डेल्हीवरी के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी सहिल बरुआ ने कहा कि हमारा विस्तृत भीवंडी गेटवे हमें विश्व स्तरीय सेवा विश्वसनीयता और दक्षता बनाए रखते हुए, मुंबई और पश्चिम क्षेत्र के बड़े और छोटे व्यापारिक भारी वाहकों के लिए क्षमता बढ़ाने में सक्षम करेगा। इस सुविधा के अत्याधुनिक ऑटोमेशन सिस्टमों में हमारे निवेश से हमें कुशलता और गति में सुधार प्राप्त करने की क्षमता मिलेगी, जिससे हमारे नेटवर्क और समूचे उद्योग के लिए एक नया मानक स्थापित होगा। स्वचालित गेटवे में 196 डॉकिंग स्टेशन हैं और इसका डिज़ाइन 8,000 टन से ज्यादा सामान की लेन-देन करने के लिए किया गया है, जिसमें प्रतिदिन 1600 वाहन गुजरते हैं, यानी हर 54 सेकंड में एक वाहन। इस फैसिलिटी का स्वचालन सिस्टम, जिसे फैल्कन ऑटोटेक (डेल्हीवरी निवेशित कंपनी) ने विकसित कियाऔर लगाया है, 1.8 किमी लंबे एकीकृत डबल-डेक क्रॉस-बेल्ट सॉर्टर्स से बना है, जिसमें 5 किमी से अधिक के सामान को ले जाने वाले प्रणालियों का इस्तेमाल किया गया है, और इसमें प्रति घंटे 32,000 शिपमेंट्स और 17,000 भारी वाहन इकाईयों को संसाधित करने की क्षमता है।

राजस्थान मंत्रि मंडल का शपथ ग्रहण समारोह

'भजन' बिन राजन लागे अलूणो

उदयपुर (ह. सं.)। राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में 22 मंत्रियों को राज्यपाल कलराज मिश्र ने 27 दिन बाद 30 दिसंबर को पहलीबार शपथ दिलाई। इनमें 15 विधायक पहलीबार मंत्री बने जबकि एक विधायक नहीं होकर प्रत्याशी होंगे जो 5 जनवरी को श्रीकरणपुर से चुनाव लड़ेंगे। राजस्थान में इस प्रकार की यह पहली घटना है जब किसी होने वाले प्रत्याशी को राज्यमंत्री की शपथ दिलाई गई। ये प्रत्याशी सुरेन्द्रपालसिंह टीटी हैं।

गौतम दक हेमंत मीणा बाबूलाल खराड़ी

जिन विधायकों को शपथ दिलाई उनमें राज्यवर्धनसिंह राठौड़ केन्द्र में तथा किरोड़ीलाल मीणा, मदन दिलावर, गजेन्द्रसिंह खींवसर, ओटाराम देवासी तथा सुरेन्द्रपालसिंह टीटी राजस्थान में मंत्री रह चुके हैं।

इस केबिनेट में मेवाड़ के गौतम दक को राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार तथा हेमंत मीणा व बाबूलाल खराड़ी को केबिनेट मंत्री की शपथ दिलाई गई। दक चित्तौड़गढ़ तथा बाबूलाल खराड़ी उदयपुर जिले के हैं। खराड़ी आदिवासी हैं जो चौथी बार विधायक बने हैं।

मंत्रिमण्डल में कुल 18 जिलों के विधायकों का प्रतिनिधित्व हुआ है। जातिगत समीकरण की दृष्टि से देखा जाय तो जाट से 4, राजपूत तथा एससी, एसटी से 3-3, ब्राह्मण से 2 तथा गुर्जर, सिख, पटेल, माली, वैश्य, धाकड़, देवासी, विश्नोई, कुमावत तथा रावत से एक-एक विधायक हैं। चुनाव के बाद भाजपा की पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया कैंप ने अपना दमखम दिखाया लेकिन उसे निराशा ही हाथ लगी है।

ओसवाल सभा का शपथ ग्रहण समारोह
बुराई को घसीटने की बजाय अच्छाई को आगे बढ़ायें : कटारिया

उदयपुर (ह. सं.)। अच्छाई को आगे बढ़ाना हो तो बुराई को पीछे घसीटने की जरूरत नहीं है। अपनी लाइन को आगे बढ़ाएं। समाज के बुजुर्ग व जिम्मेदार लोग सभी को साथ लेकर कार्य करें व अपनी लाइन को बढ़ाने का प्रयास करें। ये विचार असम के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया ने रविवार 24 दिसम्बर को शुभ केसर गार्डन में आयोजित ओसवाल समाज के प्रथम सम्मेलन, नवनिर्वाचित जैन विधायकों के अभिनंदन एवं नवनिर्वाचित कार्यकारिणी के शपथग्रहण समारोह में व्यक्त किये। वे समारोहाधिपति के तौर पर संबोधित कर रहे थे। कटारिया ने कहा कि किसी भी दल से संबंध रखने वाले सभी जैन विधायकों का सम्मान करना अच्छी परम्परा है। उन्होंने युवा पीढ़ी में संस्कारों के बीजारोपण की बात कही।

मुख्य अतिथि राज्यसभा सांसद लहरसिंह सिरोहिया, विशिष्ट अतिथि राजसमंद विधायक दीप्ति किरण माहेश्वरी, बड़ीसादड़ी विधायक गौतम दक, सहाड़ा विधायक लादूलाल पितलिया, उदयपुर शहर विधायक ताराचंद जैन, उप महापौर पारस सिंघवी, कोटा रेंज आईजी प्रसन्न खमेसरा, पाली कलेक्टर नमित मेहता, मुख्य वन संरक्षक आर. के. जैन, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष शांतिलाल चपलोत थे। अध्यक्षता ओसवाल सभा के अध्यक्ष प्रकाश कोठारी ने की।

नव निर्वाचित अध्यक्ष प्रकाश कोठारी ने कहा कि समाज के प्रत्येक सदस्य को मुख्य धारा से जोड़ने के साथ त्रैमासिक बुलेटिन के माध्यम से गतिविधियां प्रकाशित की जाएंगी। इस दौरान आगामी 18 फरवरी को इन्दौर में हो रहे दीक्षा समारोह में दीक्षित होने जा रहे अक्षय सहलोत का समाज की ओर से अभिनन्दन किया गया।

समारोह में नन्हीं बालिका परिशी कोठारी ने मोहक प्रस्तुति दी। चन्द्रकला मेहता एवं समूह, वंदना बाबेल व समूह ने भक्ति गीतों पर नृत्य प्रस्तुत किया। इस अवसर एडीएम प्रशासन शैलेश सुराणा, डीएलबी निदेशक कुशल कोठारी, उपाधीक्षक भगवतसिंह हिंगड़ व शहर के विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारी व गणमान्य नागरिक मौजूद थे। धन्यवाद मंत्री आनन्दीलाल बम्बोरिया ने दिया। संचालन आलोक पगारिया ने किया।

समारोह में राज्यपाल कटारिया द्वारा नव निर्वाचित अध्यक्ष प्रकाश कोठारी, सचिव आनन्दीलाल बम्बोरिया, उपाध्यक्ष डॉ. तुक्तक भानावत, सहमंत्री मनीष नागौरी, कोषाध्यक्ष फतहसिंह मेहता, ऑडिटर सीए अंशुल मोगरा, भंडार संरक्षक फतहलाल कोठारी व कार्यकारिणी सदस्य किरण पोखरना, सुमन कोठारी, मुकेश मोगरा, अशोक मेहता सहित कार्य परिषद सदस्यों को शपथ दिलाई गई।

बर्गर का दीवाना है उदयपुर

उदयपुर (ह. सं.)। स्विगी ने उदयपुर में फूड डिलीवरी को लेकर 2023 के टॉप ट्रेंड्स की तस्वीर साझा की है। हाउ इंडिया स्विगीड रिपोर्ट के माध्यम से इस ट्रेंड को सामने लाया गया है। इस रिपोर्ट में अलग-अलग व्यंजनों को लेकर उदयपुर के लोगों की पसंद सामने आई है।

स्विगी के वीपी, नेशनल बिजनेस हेड सिद्धार्थ भाकू ने कहा कि शहर में सबसे ज्यादा ऑर्डर की जाने वाली पांच डिशेज में पंजाबी थाली, आलू टिक्की बर्गर, डेली मील्स, स्पेशल थाली और स्टैंडर्ड थाली ने जगह बनाई है। यह ट्रेंड पारंपरिक के साथ-साथ नए फ्लेवर्स को लेकर उदयपुर के लोगों के प्यार को दिखाता है। पंचमुखी रेस्टोरेंट, दिल पंजाबी ढाबा, मैकडॉनल्ड्स, ढाबा सेक्टर-14 और मिस्टर सैंडविच ने टॉप 5 रेस्टोरेंट में अपनी जगह बनाई है। 2023 में उदयपुर में इन रेस्टोरेंट को सबसे ज्यादा फूड डिलीवरी के ऑर्डर मिले। उदयपुर में यूजर प्रेफरेंस के हिसाब से सबसे पसंदीदा फूड कैटेगरी में थाली, बर्गर एवं रैप्स, मेन कोर्स, पाव भाजी और पराठा ने अपनी जगह बनाई। मजे की बात यह है कि सबसे ज्यादा ऑर्डर के लिहाज से डिनर टाइम यहां प्राइम टाइम के रूप में सामने आया। लोकल फेवरेट के बारे में बात करें तो लोगों ने पनीर बटर मसाला को सबसे ज्यादा पसंद किया। वहीं आलू टिक्की बर्गर, मेक्सिकन पिज्जा सैंडविच और वेजी बर्गर टॉप स्नैक्स के रूप में सामने आए। बात अगर शहर के टॉप पांच डेजर्ट्स की हो, तो चॉकलेट ट्रफल केक, बेल्जियम चॉकलेट ट्रफल केक, रसमलाई, जलेबी और गुलाब जामुन ने इस दौड़ में सबको पीछे छोड़ दिया।

गजल बाईसा

एक नारखां ही काफी है

सारी जिंदगी हां-ही-हां है
मां तो आखिर मां है।। 1।।
वो तीरथ गया जिंदगी बचाने
वापस आया ही नहीं शकल दिखाने।। 2।।
यों तो मां उठ नहीं पाती बिस्तर से
बेटा चले जाने पर श्मशान जाती है।। 3।।
मत पूछो मां की ममता को
बंदरी मरे बच्चे को चिपकाये चलती है।। 4।।
अधिक उम्र जिओ तबीयत के साथ
मरूं-मरूं करने से मौत नहीं आती।। 5।।
भेड़ चाल चलने से गधा चाल बेहाल
मौका आने पर लत्ती तो झाड़दे।। 6।।
ऐसे भी हुए हैं शूरवीर रणबाज
मुंड चले जाने पर रूंड से लड़ा करते थे।। 7।।
नहीं नापा, न सही, सातवां आसमान
नापने को एक धरती ही काफी है।। 8।।
कई नाम, कई रूप हैं मां के
सरूप एक है कहीं से भी झांकें।। 9।।
यों तो सभी दिन अच्छे होते हैं जहां में
बुरा होता है आदमी तो कोई क्या करे।। 10।।
आयेंगे, चले जायेंगे सब ही
किसने बनाया ये चलाचली का खेला।। 11।।
यह क्या तुम भी रहस्यमय बने रहे
कभी तो खुलकर जिओ खुली-खुली जिंदगी।। 12।।
बेमौसम बरसना भी बरसना है
दाढ़ आने पर ही अकल आती है।। 13।।
संतति अच्छी बनें सब कोई चाहते हैं
खुद अच्छे बनें तो कोई बात बने।। 14।।
जल हो, जलजला हो
बेदाग जलज हो गजल हो।। 15।।
दोस्त हो, दोस्ती हो, समझ हो
जब भी हो, खूब हो, गजब हो।। 16।।
पहले खानदान देखते थे, मूर्ख नहीं थे
अब आंखें देखती नहीं, अंधेरा खोजती है।। 17।।
कुटुम्ब अच्छा हो, अच्छाई पनपती है
तूम्बे बेल कड़वी हो, कषैले ही होंगे।। 18।।
पतंग कितनी भी आकाश में उड़े, उड़िया खाये
धरती निश्चिंत है, डोर उसके खूंटे से बंधी है।। 19।।
चांदनी तारों से छिटकती है, अच्छी लगती है
झालर डंके का भक्तिनाद पूरी गवाड़ सुनती है।। 20।।
गलत संगत से गत बिगड़ती देखी
क्या होगा मुंह छिपाने से, कालिख जो पूती है।।। 21।।
तीसमारखां बहुत देखे तेज तर्रार
एक नारखां ही काफी है अगणित गीदड़ से।। 22।।

ठण्ड क्यों ले लेती है जान?

ठण्ड से मौत अक्सर उन लोगों की होती है जिनके पास ठण्ड से बचने के साधन नहीं होते। ठण्ड के मौसम में अचानक भीग जाने और ठण्डी हवाओं में फंस जाने वालों की मौत और भी निश्चित हो जाती है। मनुष्य गर्म खून वाला जीव है। इसका मतलब यह है कि सामान्य अवस्था में मनुष्य के शरीर का तापमान 37 डिग्री सेल्सियस अथवा 97 अंश - 99 अंश फारेनाहइट पर स्थिर रहता है घटता- बढ़ता नहीं। चाहे वातावरण का तापमान कितना भी हो कम या हमारे शरीर में ऊर्जा का लगातार उत्पादन होता रहता है और आवश्यकता से अधिक ऊर्जा, ऊष्मा या गर्मी के रूप में त्वचा विकिरण द्वारा या पसीने के साथ अथवा सांस के साथ बाहर निकलने वाले वायु के साथ भाप के कणों के रूप में शरीर से बाहर निकलती रहती है।

ठण्डक से शरीर की रक्षा करने में पहली भूमिका आहार और कपड़ों की होती है, परन्तु प्रकृति ने शरीर को भी ठण्डक से अपनी रक्षा करने की युक्ति दे रखी है। इसलिए आहार और कपड़ों से पर्याप्त सुरक्षा न मिलने पर शरीर एक-एक करके अपनी सुरक्षा प्रक्रियाओं का उपयोग करता है। त्वचा में फैली हुई तंत्रिकाओं से त्वचा का तापमान गिरने की सूचना पाते ही मस्तिष्क शरीर की मांसपेशियों को तेजी से फैलने और सिकुड़ने का आदेश देता है। इस क्रिया को ही कंपकंपी छूटना कहते हैं। कंपकंपी के दौरान मांसपेशियों में आपस की रगड़ से उष्मा पैदा होती है जो शरीर के भीतरी हिस्से का तापमान गिरने नहीं देती। इस क्रिया के दौरान एक घण्टे में 600 किलो कैलोरी से भी अधिक ऊष्मा पैदा हो सकती है।

जब इससे उत्पन्न गर्मी भी शरीर को गर्म रखने में समर्थ नहीं होती तब अगली कार्यवाही प्रारंभ होती है। जब इससे भी काम नहीं चलता तब शरीर के महत्वपूर्ण अंगों जैसे दिल, मांसपेशियों और फेफड़ों को अपनी-अपनी गतिविधियों में बदलाव लाने होते हैं। साथ ही इस परिस्थिति में थायरॉयड और एड्रीनल ग्रंथिया अधिक मात्रा में हार्मोन उत्पन्न करने लगती हैं। इन हार्मोनों की अधिकता से शरीर की चयापचयी गतिविधियां तेज हो जाती हैं जिससे अधिक ऊष्मा का उत्पादन होकर शरीर को गर्म रखने में सहायता मिलती है। शरीर के भीतरी अंगों का तापमान गिरने की स्थिति को हाइपोथर्मिया कहते हैं। हाइपो का अर्थ है कम और थर्मिया का मतलब है तापक्रम। तापक्रम 350 सेल्सियस से नीचे गिरने पर हाइपोर्मिथया की स्थिति प्रारम्भ हो जाती है। शरीर में कंपकंपी इस अवस्था में प्रारम्भ होती है और रक्तनलियों के सिकुड़ने की नौबत 320 सेंटीग्रेड तापक्रम के बाद आती है । तापक्रम 300 सेंटीग्रेड पहुंचते-पहुंचते आदमी थक-हार कर बेहोश होने लगता है। बेहोशी से पहले शरीर एक आखिरी कोशिश करता है। इस कोशिश में रक्तवाहिकाएं एकाएक फिर फैल जाती हैं जिससे त्वचा की ओर रक्त का बहाव एकाएक फिर तेज हो जाता है लेकिन इसकी वजह से शरीर में तेज गर्मी का अहसास होता है जिससे आदमी अपने कपड़े उतार कर फेंकने लगता है। इसके बाद आदमी धीरे-धीरे बेहोश हो जाता है। शरीर का तापमान 280 सेंटीग्रेड तक गिरना बहुत खतरनाक होता है। इस अवस्था में मनुष्य वेन्ट्रीकूलर फाइब्रिलेशन नामक स्थिति का शिकार हो जाता है।

- नफा नुकसान, 5 दिसम्बर 2023 से साभार

मनोरंजन के साथ शिक्षण में प्रभावी कठपुतली

– लायकराम 'मानव' –

कठपुतली एक ऐसी लोककला है, जो गांव, कस्बा, शहर, सभी जगह जानी-पहचानी जाती है। साक्षर, निरक्षर, अल्पशिक्षित या उच्चशिक्षित हर तरह के लोगों के बीच यह कला लोकप्रिय है। एक समय था, जब कठपुतली मनोरंजन तथा रोजी-रोटी का साधन मात्र हुआ करती थी परन्तु आज यह कला मनोरंजन से ऊपर उठकर एक सशक्त एवं प्रभावी जनसंचार माध्यम का रूप ले चुकी है।

आज कठपुतली का प्रयोग आमजन को विभिन्न कार्यक्रमों तथा मुद्दों के प्रति जागरूक करने के लिए व्यापक रूप से किया जा रहा है। लगभग सभी सरकारी विभागों के साथ-साथ गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा भी अपनी योजनाओं के प्रचार-प्रसार हेतु बेजान कठपुतली का प्रयोग किया जा रहा है। प्रचार माध्यम के साथ-साथ काफी समय से कठपुतलियां बच्चों को सफलतापूर्वक शिक्षित करने का भी कार्य कर रही हैं।

जन्म के बाद से ही खिलौनों के साथ बच्चे का एक तरह से प्रगाढ़ रिश्ता जुड़ जाता है। वह तरह-तरह के खिलौनों से खेलता है। उनके साथ हंसता बोलता और बात करता है। बच्चे खिलौनों के साथ भावनात्मक रूप से इस कदर जुड़े होते हैं कि उन बेजान खिलौनों की हंसी-खुशी, भूख-प्यास, उदासी और नाराजगी को भी महसूस करते हैं। यहां तक कि किसी खिलौने के टूट जाने पर उन्हें गहरा आघात पहुंचता है।

साधारणत: सात-आठ वर्ष की उम्र तक पहुंचते-पहुंचते बच्चे स्वयं खिलौनों का निर्माण करने लगते हैं। घर में पड़ी बेकार वस्तुओं से वे गुड्डे-गुड़ियों का संसार बसा लेते हैं। आजकल बाज़ार में बिकने वाले मानवीय आकार और जानवरों के विभिन्न खिलौने उन्हें लुभाने लगे हैं। उनके संग्रह में आने लगे हैं। गुड्डे -गुड़ियों के प्रति बच्चों का एक विशेष आत्मीय जुड़ाव होता है। वे उन्हें नहलाते-धुलाते, खिलाते-पिलाते और अपने पास सुलाते हैं। गुड्डे-गुड़िया का ब्याह रचाते हैं। खाना बनाते हैं और दावत आदि का आयोजन भी करते हैं। कुछ बच्चों का तो आत्मिक लगाव खिलौनों से इतना अधिक होता है कि बड़े हो जाने पर भी उनके मोहपाश से छूट नहीं पाते हैं। वे उन्हें बहुत संभाल कर रखते हैं और उनके साथ अपने बचपन के दिनों को याद करते हैं। वर्तमान संस्कृति में सहेजकर रखने की प्रक्रिया का ह्रास हुआ है।

पुतलियों का रूप और चरित्र भी गुड्डे-गुड़ियों से बहुत मिलता-जुलता है। इसलिए वे विद्यार्थी जीवन में भी पुतलियों के प्रति तुरन्त आकर्षित हो जाते हैं। यही कारण है कि पुतलियों के माध्यम से बच्चों को शिक्षित करना अत्यंत सुगम और रोचक है। पढ़ाई से मन चुराने वाले बच्चे भी पुतलियों के आकर्षण से बंध जाते हैं और खेल-खेल में ही बहुत कुछ सीख लेते हैं। इस प्रकार बाल शिक्षण में कठपुतलियों का प्रयोग अत्यंत प्रभावी सिद्ध हो सकता है।

हमारे देश में अभी तक शिक्षण कार्य में पुतलियों का प्रयोग बहुत सीमित है, जबकि विदेशों में इनका प्रयोग व्यापक रूप से किया जा रहा है। खासकर रूस, जर्मनी, फ्रांस, इटली, स्वीडन, नार्वे, बेल्जियम, हालैंड, स्पेन, पोलैंड, रोमानिया, चेकोस्लोवाकिया और डेनमार्क आदि देशों में पुतलियों का प्रयोग शिक्षण कार्य में खूब हो रहा है। हमारे देश में भी इस विधा को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। आजकल शिक्षण कार्य में डिजिटल माध्यम पर काफी जोर दिया जा रहा है, परन्तु संसाधनों के अभाव में सभी जगह डिजिटल माध्यम का प्रयोग कर पाना सम्भव नहीं है जबकि, बहुत थोड़े से खर्च में पुतली माध्यम में उन्हें सिखाने-समझाने की व्यवस्था व्यापक रोचकता के साथ आसानी से की जा सकती है।

कठपुतली एक ऐसा माध्यम है, जिसके प्रयोग में बच्चों की भी बराबर की साझेदारी हो सकती है। पुतली बनाने, उस पर रंग-रोगन चढ़ाने, कपड़े पहनाने, सजाने-संवारने, कहानी गढ़ने, गाने-बजाने, संवाद बोलने और संचालन आदि करने जैसे हर कार्य में बच्चों को बहुत ही सहजता से साझीदार बनाया जा सकता है। इससे बच्चे पुतलियों के साथ भावनात्मक रूप से जुड़ जाते हैं। इस प्रकार बच्चे पुतलियों के खेल से सीखते तो हैं ही, वे एक तरह के रचनात्मक और व्यावसायिक कौशल में भी दक्ष हो जाते हैं।

बच्चों के लिए कठपुतली निर्माण और संचालन अत्यंत सरल तथा रोचक है। यह केवल सामान्य बच्चों के लिए ही नहीं, बल्कि गूंगे, बहरे, मंदबुद्धि, हकलाने वाले, पढ़ाई से जी चुराने वाले और संकोच व दब्बू किस्म के बच्चों के लिए भी काफी रोचक तथा प्रभावी है। ऐसा प्रयोगों के संग ही साधारण तौर पर देखने को मिलता है। बहरे बच्चों को सुनने में भले दिक्कत हो, परन्तु पुतली

बनाने, सजाने, संवाद पढ़कर याद करने, बोलने, गाने-बजाने और संचालन करने का कार्य वे आसानी से कर सकते हैं। गूंगे बच्चे बोल नहीं सकते, परन्तु अन्य कार्य कर सकते हैं । हकलाने वाले बच्चों को ध्यान में रखकर यदि कठपुतली की कहानी तैयार की जाए, उनकी समस्या के अनुसार शब्द व संवाद संयोजित किए जाएं तो उन संवादों को बोलने का अभ्यास करके वे हकलाने की समस्या से मुक्त हो सकते हैं। इस जादू भरी कठपुतली कला से घुल-मिलकर संकोची, दब्बू, मंदबुद्धि तथा पढ़ाई से जी चुराने वाले बच्चे भी मुखर हो सकते हैं। स्कूलों में कठपुतली को किसी भी विषय के शिक्षण का माध्यम बनाया जा सकता है। इतिहास, गणित, विज्ञान, हिंदी, अंग्रेजी, भूगोल, नैतिक शिक्षा आदि हर विषय का ज्ञान बच्चों को रोचक ढंग से दिया जा सकता है। यह शिक्षकों की सूझबूझ और कुशलता पर निर्भर करता है। उन्हें विषय और पाठ की जरूरत के अनुसार कठपुतली कार्यक्रम का निर्माण करना होगा। कहानी, कविता, क्विज आदि विधाओं का प्रयोग करके विषय को आसान और रुचिकर बनाया जा सकता है।

बच्चे कहानी खूब पसंद करते हैं और जब कहानी कठपुतली के माध्यम से प्रस्तुत की जाय तो कहना ही क्या! प्रस्तुति देखकर वे उसे अपने मन में बिठा लेते हैं। बाद में वे कक्षा में या अपने साथियों के बीच उस कहानी को प्रस्तुत भी कर सकते हैं। इससे उनका शब्दकोश और भाषा का ज्ञान बढ़ता है। इसी प्रकार वे कठपुतली नाटक के बीच-बीच में पिरोए गए गीतों और कविताओं को भी याद कर लेते हैं। बच्चों के मध्य जब कठपुतली का कार्यक्रम प्रस्तुत जाय तो यह ध्यान भी रखना आवश्यक है कि कार्यक्रम के साथ दर्शक छात्र-छात्राओं की भागीदारी भी बनी रहे। इसके लिए प्रस्तुत करने वालों का इस कार्य में दक्ष होना आवश्यक है। उदाहरण के लिए संवाद बोलते-बोलते अंत के एक-दो शब्द जानबूझ कर छोड़ दिए जाएं तो बच्चे उन शब्दों को बोलकर संवाद स्वयं पूरा कर देते हैं।

इसी प्रकार कविता या गीत की दोहराई जाने वाली पंक्तियों को भी आधी गाकर छोड़ दिया जाय तो बच्चे उन पंक्तियों को पूरा कर देते हैं। इसी प्रकार बीच-बीच में बच्चों से कठपुतली पात्रों द्वारा कुछ मजेदार बातचीत की जाए, मन को गुदगुदाने वाले प्रश्न पूछे जाएं, उनसे तालियां बजाने को कहा जाए। कठपुतलियों द्वारा छोड़े गए अधूरे वाक्यों को पूरा करके, उनके साथ हंस-बोल करके, प्रश्नों के उत्तर देकर के और तालियां बजा करके बच्चों का उत्साह और आत्मविश्वास बढ़ता है, उनका संकोच टूटता है, शब्द ज्ञान बढ़ता है और सीखने-सिखाने, कुछ कर दिखाने के प्रति उनकी रुचि बढ़ती है। बहुत सी जो बातें बच्चे पढ़ करके या अध्यापक द्वारा बताए जाने पर भी नहीं सीख पाते, वही बातें वे पुतलियों के माध्यम से आनंदपूर्वक सीख लेते हैं। वे बातें आसानी से उनके ज़ेहन में बैठ जाती हैं।

शिक्षा माध्यम के लिए विद्यालयों को चाहिए कि वे कठपुतली बनाने, सजाने, कहानी गढ़ने, संवाद बोलने, गीत गाने, वाद्य यंत्र बजाने और पुतलियों का संचालन करने आदि हर कार्य में बच्चों को साझीदार बनाएं। इसके लिये उन्हें कठपुतली विशेषज्ञों के कुछ समय के मार्गदर्शन व प्रशिक्षण की आवश्यकता होगी। इस तरह शिक्षकों के साथ करते-करते बच्चे इन सभी कार्यों को बड़े मजे में सीख लेते हैं। हम सब जानते हैं कि बच्चों में निरीक्षण करने और नकल करके सीखने की विशेषता होती है। मां कैसे डांटती है, दादी पोपले मुंह से कैसे खाना खाती हैं, दादाजी कैसे खांसते हैं, पिताजी गुस्से में कैसे बड़बड़ाते हैं आदि बातों का वे रोज निरीक्षण करते हैं और इन चीजों की नकल भी आसानी से उतार लेते हैं। नकल उतारने की उनकी यह कला कठपुतली संचालन में बहुत काम आती है। इसी तरह बंदर के उछलने-कूदने, कुत्तों के भौंकने और शेर के गरजने की नकल भी आसानी से उतार लेते हैं। बच्चों की सीखने की क्षमता बड़ों से अधिक होती है। थोड़े दिनों के प्रशिक्षण से ही वे इस कला में निपुण हो जाएंगे, जो आगे चलकर उनकी रोजी-रोटी का जरिया भी बन सकती है।

अपने देश में कई ऐसे कलाकार और संस्थान हैं, जो कठपुतली कला द्वारा बच्चों को शिक्षित करने का कार्य कर रहे हैं। इस संबंध में लखनऊ में स्थित साक्षरता निकेतन का जिक्र करना आवश्यक हो जाता है, जिसकी शिक्षा-साक्षरता के क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विशिष्ट पहचान है। साक्षरता निकेतन ने सन् 1955 में नैनी, इलाहाबाद से कठपुतली कला की शुरूआत की थी। यद्यपि साक्षरता निकेतन ने प्रौढ़ों को साक्षर और शिक्षित करने के लिए कठपुतली कला का प्रयोग सबसे अधिक किया है, परन्तु कठपुतलियों द्वारा बच्चों को भी शिक्षित करने में इसकी खास पहचान है। खासकर अनौपचारिक शिक्षा के बच्चों को शिक्षित करने में इस संस्थान का बहुत बड़ा योगदान है।

साक्षरता निकेतन लखनऊ का योगदान कभी नहीं भुलाया जा सकता। सन् 1956 में लखनऊ में कानपुर रोड पर 20 एकड़ के विस्तृत क्षेत्र में अमेरिकन विदुषी वेल्दी हानसिंगर फिशर द्वारा साक्षरता निकेतन की स्थापना की गई थी। श्रीमती फिशर ने इस संस्था की स्थापना अशिक्षित एवं निरक्षर ग्रामीणों को साक्षर बनाने के उद्देश्य से की थी। उन्होंने निर्धन ग्रामीणों के जीवन-स्तर में सुधार लाने हेतु अनेक कार्यक्रम चलाए। श्रीमती फिशर को आज लोग अक्षरदात्री माँ के रूप में जानते हैं। माँ फिशर ने ही साक्षरता निकेतन में ग्रामीणों का मनोरंजन करने, उन्हें जागरूक करने तथा शिक्षा के प्रति प्रेरित करने के उद्देश्य से कठपुतली इकाई की स्थापना की थी ।

साक्षरता निकेतन बड़े पैमाने पर कठपुतली बनाने, उन्हें संचालित करने व नचाने तथा कठपुतली नाटक तैयार करने के प्रशिक्षण कार्यक्रम बराबर आयोजित करता रहा है। अब तक सैकड़ों युवा यहाँ से प्रशिक्षण ले चुके हैं। इनमें से अनेक लोग ऐसे हैं, जो कठपुतली की टीम बनाकर अपनी रोजी-रोटी चला रहे हैं । साक्षरता निकेतन द्वारा निर्मित कठपुतलियाँ देश के कोने-कोने तक पहुँची हुई हैं। दस्ताना कठपुतली तथा राड़ कठपुतली यहाँ की विशेषता रही है। कठपुतली प्रदर्शन में आमतौर पर दिखने वाले उद्घोषक, डांसर तथा हुक्केबाज यहाँ के विशेष चरित्र हैं, जो दर्शकों को चमत्कृत कर देते

हैं। उद्घोषक का मुँह भी चलता है और बड़ी-बड़ी आँखें भी। गर्दन अपने आकार से दोगुनी लम्बी हो जाती है। इसी तरह डांसर की आँखें भी संगीत की धुन के साथ थिरकती हैं। उद्घोषक और डांसर दोनों राड़ कठपुतली हैं। दस्ताना कठपुतली में हुक्केबाज का कमाल यह है कि वह हुक्का पीकर मुँह से धुँआ निकालता है। इसे देखकर छोटे-बड़े दर्शक सभी खूब तालियाँ बजाते हैं।

साक्षरता निकेतन द्वारा विभिन्न विषयों पर अब तक सैकड़ों कठपुतली नाटक तैयार किए जा चुके हैं। इनमें प्रमुख हैं- कालिया से कालिदास, बँटवारा, औरत की नाक, एक गिलास दूध, दीप से दीप जले, विटप सिंह की करतूत, बाढ़ आई और गई, जो जीता सो हारा जो हारा सो मरा, बादल रूठ गए, हीरा कंचा और कचौरी, फैय्याज खाँ की मूँछें आदि। इन नाटकों का अब तक सैकड़ों बार मंचन हो चुका है। साक्षरता निकेतन मे तो विशेष कठपुतली मंच है ही, कई बार कुम्भ मेले में साक्षरता निकेतन द्वारा सजाया गया कठपुतली मंच श्रद्धालुओं के आकर्षण का केन्द्र रह चुका है।

इसी कड़ी में उदयपुर, राजस्थान स्थित भारतीय लोककला मण्डल का उल्लेख करना भी आवश्यक है। भारतीय लोककला मण्डल भारत में लोककलाओं का एक बड़ा और महत्वपूर्ण केंद्र है और लोककला के रूप में कठपुतली यहां की विशेष पहचान है। लोककला मण्डल ने भी बच्चों को शिक्षित करने में काफी काम किया है। इस क्षेत्र में वहां के पूर्व निदेशक डॉ. महेन्द्र भानावत ने बच्चों के प्रभावी शिक्षण हेतु बहुत से नए-नए प्रयोग किए हैं। यहां से कठपुतली कला पर कई पुस्तकें भी प्रकाशित की गई हैं, जिनमें से अधिकांश के लेखक डॉ. महेन्द्र भानावत हैं।

नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया द्वारा प्रकाशित पुस्तक-कठपुतली मार्गदर्शिका की लेखिका सुश्री मीना नाईक ने सन् 1975 से 1979 की अवधि में मुंबई दूरदर्शन से बच्चों के लिए एक कार्यक्रम प्रस्तुत किया था, जिसका नाम था- किलबिल। इस कार्यक्रम में मीनाजी के साथ एक कठपुतली हुआ करती थी, जिसका नाम उन्होंने धितुकल्या रखा था। वे कार्यक्रम के दौरान धितुकल्या से गप्पें लड़ाते हुए कार्यक्रम को आगे बढ़ाती थीं। उनका यह कार्यक्रम बच्चों के बीच काफी लोकप्रिय हुआ था। बाद में मीना नाईक ने कठपुतली को शिक्षण का माध्यम बनाकर बच्चों के लिए काफी काम किया। उन्होंने बच्चों के लिए कई कठपुतली नाटक भी लिखे। लखनऊ दूरदर्शन से भी प्रस्तुतकर्ता मोहम्मद शमीम ने 'अक्कड़-बक्कड़' नाम की दो कठपुतलियों को लेकर बच्चों के लिए कार्यक्रम बनाया था। इस कार्यक्रम में वे कभी बच्चों को आइसक्रीम की फैक्ट्री ले जाते तो कभी छापाखाना की गतिविधियों से परिचित कराते।

वाराणसी की सन् 1997 से अभिनव समिति भी कठपुतली कला के माध्यम से साक्षरता अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के साथ-साथ बच्चों को शिक्षित व जागरूक करने का कार्य कर रही है। समिति के निदेशक राजेन्द्र कुमार श्रीवास्तव बताते हैं कि उनके पास 13 कठपुतली विशेषज्ञों की भरी-पूरी टीम है। साथ ही लगभग तीन सौ पुतलियों का विशाल संग्रह है ।

महोली, सीतापुर के प्राथमिक विद्यालय शिक्षक अतन शुक्ला ने शिक्षण कार्य को सुगम और रोचक बनाने के उद्देश्य से सन् 2018 में कठपुतली कला का बाकायदा प्रशिक्षण लेकर बालशिक्षण में कठपुतली का विधिवत प्रयोग शुरू किया। वे अपने विद्यालय में बच्चों को शिक्षित और जागरूक करने में सफलतापूर्वक इस माध्यम का प्रयोग कर रहे हैं । इतना ही नहीं, उन्होंने धीरे-धीरे प्रशिक्षण देकर बच्चों को भी इस कला के साथ जोड़ लिया है। अतन शुक्ला प्रसिद्ध बाल साहित्यकारों की कहानियों व कविताओं पर सूझबूझ के साथ बच्चों के बीच प्रस्तुतियां देते हैं। अपने प्रयत्नों से इस तरह के प्रयोग अन्य शिक्षक भी कर सकते हैं। लखनऊ की श्रीमती उमा शुक्ला भी कठपुतली कला के माध्यम से बालशिक्षण और जागरूकता के क्षेत्र में विद्यालयों में संलग्न हैं ।

उपरोक्त संस्थाओं व कलाकारों का वर्णन तो मात्र उदाहरण के लिए है। ऐसी और कई संस्थाएं हैं, जो कठपुतली कला के माध्यम से बाल शिक्षण के कार्य में संलग्न हैं। फिर भी भारतवर्ष में अभी तक इस क्षेत्र में किए गए प्रयास बहुत अल्प हैं। शिक्षा के क्षेत्र में जिस तरह डिजिटल माध्यम पर जोर दिया जा रहा है, उसी तरह कठपुतली माध्यम को भी बढ़ावा दिया जाना चाहिए। खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में, जहां कम्प्यूटर, इंटरनेट और बिजली की सुविधा नहीं है, ऐसे क्षेत्रों में शिक्षा और जन संचार का यह माध्यम अत्यंत सुगम, प्रभावी और सुविधाजनक है।

– छायानट, लखनऊ के पुतल कला विशेषांक अंक 167 से साभार

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।